जिनागम

धर्म-परिवार-समाज-व्यवसाय का समन्वय

समस्त जैन समाज को एकजुट करने वाली एकमात्र पत्रिका

वर्ष -२६ अंक -१० जून २०२४ सम्पादक-बिजय कुमार जैन पृष्ठ ३६ मूल्य - १५० रूपए प्रति

हे प्रभो! यह तेरापंथ

श्वेताम्बर जैन दिगम्बर

आचार्य श्री तुलसी महाप्रयाण दिवस व आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के जन्म दिवस पर शत् शत् नमन

भारत के इतिहास में पहली बार

२२ भारतीय भाषाओं में

'भारत नाम सम्मान' गीत की रिकार्डिंग

भारत के प्रधान मंत्री को उपहार स्वरूप दी जाएगी

ताकि भारतीय संविधान के अनुच्छेद क्रमांक १ से INDIA नाम को विलुप्त किया जा सके

पढ़े पृष्ठ ३ पर

आव्हानकर्ता व निवेदनकर्ता

मैं भारत हूँ फाउंडेशन

भारत सरकार द्वारा पंजीकृत अंतर्राष्ट्रीय संस्थान

राष्ट्रीय कार्यालय : बी-217, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत-400059

कोलकाता कार्यालय : ऑफिस नं.77, सदासुख कटरा, दूसरा तल्ला, 201/बी, महात्मा गांधी रोड, कोलकाता, पश्चिम बंगाल, भारत-700007

भारत को 'भारत' ही बोला जाए

www.mainbharathun.co.in

पत्रिका द्वारा होने वाली आय भारतीय भाषायी संस्कृति संवर्धन व हिंदी बनें राष्ट्रभाषा अभियान की सफलता पर खर्च किया जा रहा है

www.jinagam.co.in Remove INDIA Name From the Constitution INDIA को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए

+91 8080 700 999 | stay@thebyke.com | www.thebyke.com

जय भारत जय भारत जय भारत

भारत सरकार द्वारा पंजीकृत क्र. U80300MH2021NPL369101

मैं भारत हूँ फाउंडेशन

भारतीय संस्कृति की ओर अग्रसर

द्वारा प्रायोजित संगीतमय गीत

भारत नाम सम्मान

कई अवार्ड से सम्मानित विश्व भर में

संगीत : दिलीप सेन (प्रख्यात संगीतकार)

गायन : मोहम्मद सलामत (पुरुष), रेखा राव, अर्चना जैन महिला)

गीतकार : लता हया

अब हो रहा है भारत में पहली बार

हिन्दी से २१ भारतीय भाषाओं में अनुवाद

* मराठी	* गुजराती	* राजस्थानी	* बांग्ला	* आसामीज
* मणिपुरी	* हरियाणवी	* गढवाली	* भोजपुरी	* पंजाबी
* डोगरी	* तमील	* कन्नड़	* मलयालम	* ओड़िया
* तेलुगु	* सिंधी	* संथाली	* अवधी	* कोंकणी

* अंग्रेजी (विदेशी भाषा)

एक दिन हर भाषा में बोला जाएगा

अपने देश का नाम केवल 'भारत' अब INDIA नहीं

भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए INDIA नहीं

साथ दें - सहयोग करें - मार्गदर्शन दें

निवेदक

राष्ट्रीय अध्यक्ष
बिजय कुमार जैन, मुंबई
मो. 9322307908

राष्ट्रीय महामंत्री
शोभा सादानी, कोलकाता
मो. 8910628944

राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष
डॉ. गोविंद माहेश्वरी, कोटा
मो. 9414183919

राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष
निशा लड्ढा, कोलकाता
मो. 9830224300

For Donation

अंतर्राष्ट्रीय संयोजक
अरूण मूँधड़ा, हॉस्टन, अमेरिका
मो. 01(919)610-7106

राष्ट्रीय सांस्कृतिक निर्देशक
दिलिप सेन, मुंबई
मो. 93228 66476

राष्ट्रीय सांस्कृतिक मंत्री
रवि जैन, मुंबई
मो. 8108843571

जय भारत

जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

अगला अंक

जैन एकता

श्वेताम्बर जैन दिगम्बर

जैन एकता से ही जैन समाज का विकास व सम्मान बढ़ेगा
मिल कर कहें हम-सब जैन हैं

BASANTILAL SANCHETI JAIN
Mob. 098199 76662

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

PG

Prathmesh Gold

Specialist in Bangles

204, Golden Plaza, 2nd Floor, 93/95, Dhanji Street, Mumbai, Maharashtra, Bharat-400 003
Tel.: +91-22-23468222 / 61832199 / 49117305 / 33527305
E-mail: prathmeshgold92@gmail.com

Tariff Card

Monthly Magazine
Main Bharat Hun

Reader Ship
17,000

Readers
Politician /

Release Date
21th day of Every Month

Magazine Size
A4

Print Area
19 cm x 24 cm

Print in Colour
Art Paper/Card

विज्ञापन दर 1st November 2022

ADVERTISEMENT RATE

Front Cover (With Photo/Sponsorship) Size : 185 x 225 mm	55,000/-*	+ 5% GST
Front Page (Cover Inside) Size : 185 x 225 mm	33,000/-*	+ 5% GST
Back Page (Cover) Size : 185 x 225 mm	35,000/-*	+ 5% GST
Back Page (Inside Cover) Size : 185 x 225 mm	31,000/-*	+ 5% GST
Opening of Magazine/3rd Page Size : 185 x 225 mm	32,000/-*	+ 5% GST
Centre Page Size : 185 x 225 mm	40,000/-*	+ 5% GST
Special Position on Editorial Page (if available) Quarter Page / Strip) Size : 185 x 50 mm	8,000/-*	+ 5% GST
Full Page (Inside) Size : 185 x 225 mm	22,000/-*	+ 5% GST
Half Page Size : 185 x 110 mm	12,000/-*	+ 5% GST
Quarter Page Size : 90 x 110 mm	6,000/-*	+ 5% GST

* Per Insertion

आचार्य श्री विद्यासागर ने कहा-

भारत को केवल 'भारत' ही बोलना चाहिए INDIA नहीं

विजय कुमार जैन

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' अब इंडिया नहीं, भारत आज सफलता के पायदान पर चढ़ते चला जा रहा है। भारत के वर्तमान प्रधानमंत्री 'स्वच्छ भारत, नशा मुक्त भारत' आदि-आदि का अभियान चला रहे हैं और हर भाषण व बोलने में 'भारत' नाम का ही उल्लेख करते हैं। एक दिन पूरा विश्व हमारे देश को 'भारत' ही बोलेगा, बहुत ही जल्द भारत सरकार भारतीय संविधान के अनुच्छेद १ से इंडिया को विलुप्त करवाएगी और विश्व के मानचित्र में INDIA की जगह 'भारत' लिखा जाएगा और भारत माँ कह सकेगी 'मैं भारत हूँ' और 'भारत माता की जय' का डंका विश्व में बजेगा।

शरद पूर्णिमा का वह पावन दिन, जिस दिन हुआ अवतरण एक ऐसे राष्ट्रचिंतक, परम तपस्वी, हम भारतीयों के आराध्य, परमाचार्य विद्यासागर जी, का जो आज किसी परिचय के मोहताज नहीं है। पूरा विश्व चलते-फिरते तीर्थंकर की तरह आपको सम्मान देता रहा है, जो स्वयं अपने लिए नहीं, करोड़ों के जीवन का उद्धार कैसे हो, ऐसे विचारक रहे हैं। संयमशाली जीवन जीने वाले मेरे परम पूजनीय, मुझे राह बताने वाले 'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' अभियान की सफलता के लिए आशीर्वाद देने वाले, हर भारतीय दिल के प्यारे पूजनीय विद्यासागर जी का मैंने जब-जब दर्शन किया, अपने आप को धन्य ही पाया, मेरे जीवन में संचार ही आया, आगे ही आगे बढ़ता चला गया।

आचार्य श्री विद्यासागर जी ने जब मुझसे पूछा था कि विजय कुमार! तुम्हारे भारत की एक राष्ट्रभाषा कौन सी है? तुम्हारे देश के कितने नाम है? जबकि मेरा नाम एक ही है 'विद्यासागर'।

ना तो तुम्हारे देश की कोई राष्ट्रभाषा है जबकि 'हिंदी' भाषा सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है, 'हिंदी' को राष्ट्रभाषा बनने का अधिकार भी है, क्योंकि 'हिंदी' ही रोजी-रोटी की भाषा है, बाकी सभी भारतीय भाषाएं 'हिंदी' की बहनें हैं, वह सभी 'मातृभाषाएं' हैं।

आचार्य श्री ने कहा कि जब किसी इंसान के संवैधानिक नाम दो नहीं होते तो तुम्हारे देश के दो नाम संवैधानिक कैसे हो सकते हैं 'भारत और इंडिया'? क्या कहीं नाम का अनुवाद होता भी है भला, 'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाएगा' एक दिन, बस प्रयास करते चले जाओ।

आज पूरे देश में एक अभियान छेड़ा गया है कि हमारे देश का नाम 'भारत' ही होना चाहिए। प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव जी के ज्येष्ठ पुत्र भरत के नाम से हमारे देश का नाम 'भारत' पड़ा था, अंग्रेजों के कुचक्र के कारण हमारे देश का नाम बदल दिया गया यानी 'इंडिया' कर दिया गया। आचार्य श्री विद्यासागर जी के निर्देशानुसार 'मैं भारत हूँ' परिवार ने देश के कोने-कोने में 'भारत नाम सम्मान' की लड़ाई शुरू की है, इस अभियान में हर भारतीयों को जुड़ना चाहिए। 'मैं भारत हूँ' परिवार विश्वास दिलाता है कि यदि सभी भारतीयों का सहयोग मिला तो विश्व के मानचित्र यानी Globe में जहां पर INDIA लिखा है वहां पर 'भारत' लिखा जा सकेगा, ऐसा आशीर्वाद व विचार रखने वाले आचार्य श्री विद्यासागर जी जरूर आज हमारे बीच नहीं है पर उनकी राष्ट्रवादी सोच हम भारतवासियों को प्रेरणा देती रहेगी और एक न एक दिन 'भारत' की संवैधानिक राष्ट्रभाषा 'हिंदी' बनेगी और विश्व में 'भारत' को केवल 'भारत' ही बोला जाएगा और विश्व के मानचित्र में INDIA की जगह संवैधानिक रूप से BHARAT लिखा जाएगा और माँ भारती विश्व को कहेगी 'मैं भारत हूँ' INDIA नहीं। जय भारत!

लेखक "मैं भारत हूँ फाउंडेशन" मुंबई के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं वरिष्ठ पत्रकार हैं।
ईमेल : response50123@gmail.com

RNI No. : DELHIN/2016/65854
ISSN 2456-1207
भारत की राजधानी नई दिल्ली से प्रकाशित
चाणक्य वार्ता
(अंतर्राष्ट्रीय पाक्षिक पत्रिका)

क्रमांक : डीएलसीवी / 0524 / 047 दिनांक : 02 मई, 2024

सेवा में,
श्री बिजय कुमार जैन
मैं भारत हूं फाउंडेशन
मुंबई, महाराष्ट्र

विषय : चाणक्य वार्ता के गौरवशाली 200वें अंक 'संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज स्मृति विशेषांक' में लेख प्रदान करने हेतु आभार–पत्र।

महोदय,
सादर नमस्कार

राष्ट्रवादी विचारों से ओतप्रोत चाणक्य वार्ता पाक्षिक पत्रिका ने विगत 9 वर्षों में अपने 200 गौरवशाली अंक प्रकाशित किए हैं। चाणक्य वार्ता ने अपना 200वां अंक राष्ट्रसंत आचार्य श्री विद्यासागर महाराज स्मृति विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया है। इस विशेषांक में आचार्य श्री के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से संबंधित हर पहलू को पाठकों तक पहुंचाने का प्रयास हुआ है।

हमें आपको यह बताते हुए भी अत्यंत हर्ष एवं गौरव का अनुभव हो रहा है कि इस विशेषांक का भव्य विमोचन 16 अप्रैल, 2024 के दिन मध्य प्रदेश के प्रमुख जैन तीर्थ कुण्डलपुर (जिला – दमोह) में परम पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर महाराज की समाधि उपरांत नवागत आचार्य श्री समय सागर महाराज के आचार्य पदारोहण के ऐतिहासिक समारोह में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के माननीय सरसंघचालक डॉ. मोहन राव भागवत जी के करकमलों द्वारा संपन्न हुआ। 'संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर महाराज स्मृति विशेषांक' का स्वागत लाखों की जनता एवं समस्त मुनि संघ द्वारा किया गया।

हम आपके अत्यंत आभारी हैं कि आपने इस राष्ट्रीय महत्व के विशेषांक में अपना लेख हमें प्रदान किया जिससे इस विशेषांक की गरिमा बहुत अधिक बढ़ी है। आपके इस लेख को विशेषांक के पृष्ठ संख्या – 82 पर प्रकाशित किया गया है। आशा है कि आपको यह विशेषांक अवश्य ही पसंद आएगा। आपकी प्रतिक्रिया इस विशेषांक हेतु सादर आमंत्रित है।

भवदीय

अमित जैन...

डॉ. अमित जैन
संपादक
मो. : 9871909808

मुख्यालय : 'सन्निधि', ए-28, मनसाराम पार्क, (निकट द्वारका मोड़ मैट्रो स्टेशन), नई दिल्ली–110059
कॉर्पोरेट कार्यालय : 321, तृतीय तल, वर्धमान क्राउन मॉल, प्लॉट–2, सेक्टर–19, द्वारका, नई दिल्ली–110077
मो. 09871909808, ई-मेल : chanakyavarta@gmail.com, वेबसाईट : www.chanakyavarta.com

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

२७ वें वर्ष में प्रवेश

वर्ष -२६, अंक १०, जून २०२४

दिगम्बर जैन श्वेताम्बर
जिनागम
समस्त जैन समाज को एकजुट करने वाली एकमात्र पत्रिका

१२ अंकों का वार्षिक मूल्य रू.२१००/-

सम्पादक - बिजय कुमार जैन
वरिष्ठ पत्रकार व सम्पादक
भारत को भारत ही कहा जाए
का आव्हान करने वाला एक भारतीय

उपसंपादक - संतोष जैन 'विमल'
कार्यकारी सम्पादक - अनुपमा शर्मा (दाधीच)

- 'जिनागम' में प्रकाशित लेखों/कविताओं/समाचारों/ विज्ञापनों से पूर्व सहमत होना सम्भव नहीं है।
- 'जिनागम' से सम्बन्धित समस्त विवादों के लिये न्याय क्षेत्र अंधेरी, मुम्बई ही मान्य माना जायेगा।

सम्पादकीय मुख्य कार्यालय
गेलार्ड पब्लिकेशन्स प्रा. लि.
बी-२१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत -४०० ०५९
दूरभाष :- ०२२-४०१५८०९४
अणु डाक :- mailgaylordgroup@gmail.com
अन्तरताना:- http//www.jinagam.co.in

कृपया विज्ञापन बिल सदस्यता की राशि का भुगतान नीचे दिये गए बैंक में जमा करा सकते हैं

HDFC Bank
Andheri East Branch
RTGS / NEFT
IFSC: HDFC 0000592.
Account No.05922320003410

State Bank Of India
(01594) Marol Mumbai Branch.
IFS Code :SBIN0001594.
Account No. 030338727406.
in the name of GAYLORD PUBLICATIONS PVT.LTD.
Payment Transfer & Inform to us on: 9322307908

श्वेताम्बर दिगम्बर • **सम्पादकीय** • दिगम्बर श्वेताम्बर

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा

राजनिति क्षेत्र में जैन समाज के प्रतिनिधी नगण्य

भारत का इतिहास बताता है कि जैन समाज के प्रतिनिधियों ने 'भारत' के उत्थान हेतु कई ऐसे उल्लेखनीय कार्य किए है जिससे 'जैनों' का नाम ऐतिहासिकता के रूप में दर्ज है। भारत की पहली लोकसभा में जैन समाज के प्रतिनिधियों ने उल्लेखनीय जीत हासिल कर 'भारत' की स्वतंत्रता के बाद 'भारत' के लिए कई ऐसे समायोजक कार्य किये, पर धीरे-धीरे अपनी उपस्थिति राजनैतिक स्तर पर कम करते गए और आज नगण्य जैसी स्थिति पर आ गए हैं।

विदित हो कि आज जैन समाज ने व्यापारिक, धार्मिक क्षेत्र में अपनी प्रतिभा बढ़ाई है और भारत के नव निर्माण में अपना कर्तव्य भी निभाया है तभी तो कहते हैं कि 'भारत' की आर्थिक प्रगति में जैन समाज ने अपना नाम प्रथम पंक्ति में अंकित कर लिया है।

वर्तमान की उथा-पुथल राजनिति में जैन समाज की उपस्थिति इसलिए भी जरूरी है कि हमारे निवेदन पर कानून का संज्ञान जाए, कई-कई बार ऐसा भी होता है कि हमें हमारे अधिकारों के संरक्षण के लिए वो सुविधा नहीं मिल पाती जो कि हमारे सबसे अधिक पवित्र ग्रंथ भारतीय संविधान में मुद्रित है, इसलिए समय रहते संवैधानिक अधिकारों के लिए हमारे जैन प्रतिनिधी को भी राजनीति क्षेत्र में जाना ही चाहिए। मेरा सभी जैन पंथों के प्रभुत्व व विशिष्ठजनों से निवेदन है कि वे युवा पीढ़ी को संबोधन करें, मार्गदर्शन दें कि वे राजनैतिक, सामाजिक व धार्मिक क्षेत्र में भी कार्य करें, ताकि भारतीय राजनीति में उनका भी परापेक्ष रहे।

यह सब हो भी सकता है जब हम एक दूसरे के साथ मिलकर कार्य करें, 'जैन एकता' अभियान को केवल सफल बनायें।

जय जिनेंद्र!

जय भारत!
जय भारतीय संस्कृति!

पूर्ण राष्ट्र की परिभाषा
भाव-भूमि और भाषा

आपका अपना
जैन एकता का सिपाही
बिजय कुमार जैन
वरिष्ठ पत्रकार व सम्पादक
हिंदी सेवी-पर्यावरण प्रेमी
भारत को भारत ही कहा जाए
का आव्हान करने वाला एक भारतीय
मो.९३२२३०७९०८

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

आचार्य श्री तुलसी जी का संक्षिप्त जीवन परिचय

२७ वें महाप्रयाण दिवस पर

आचार्य श्री तुलसी (२० अक्टूबर १९१४ - २३ जून १९९७) एक प्रमुख जैन धर्मगुरु थे। वे अणुव्रत आंदोलन और जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूं के संस्थापक और सौ से अधिक पुस्तकों के लेखक थे।

आचार्य महाप्रज्ञ, आचार्य महाश्रमण और साध्वीप्रमुख कनकप्रभा उनके शिष्य थे।

जीवनी :

आचार्य तुलसी का जन्म २० अक्टूबर १९१४ को राजस्थान के वर्तमान नागौर जिले के लाडनूं में वंदना और झुमरमल खटेर के घर हुआ था। श्वेताम्बर तेरापंथ संघ के तत्कालीन आचार्य कालुगणी ने तुलसी जी को बहुत प्रभावित किया। तुलसी जी को १९२५ में ११ साल की उम्र में भिक्षु बनने की दीक्षा दी गई थी। १९३६ में कालुगणी ने रंगलाल हिरन के घर-रंग भवन में गंगापुर में तुलसी को अपना उत्तराधिकारी नामित किया, जिससे वे तेरापंथ संघ के नौवें आचार्य बन गए। संघ के अपने नेतृत्व के दौरान उन्होंने ७७६ से अधिक साधु-साध्वियों को दीक्षा दी।

छात्रवृत्तिः

१९७० के दशक में आचार्य तुलसी ने जैन आगमों पर शोध, अनुवाद और टिप्पणियों का संकलन शुरू किया। आचार्य तुलसी ने युवाचार्य महाप्रज्ञ के साथ जैन ध्यान को फिर से खोजने की कोशिश की और इसे 'प्रेक्षा ध्यान' कहा।

अणुव्रत आंदोलनः

१९४९ में उन्होंने पांच जैन सिद्धांतों सत्य, अहिंसा, गैर अधिकार, गैर-चोरी और ब्रह्मचर्य के आधार पर अणुव्रत आंदोलन ('अणु-छोटा, व्रत-व्रत' अणुव्रत भिक्षुओं के लिए महाव्रतों का सीमित संस्करण है) शुरू किया, जैसा कि आम लोगों के लिए उनके सीमित संस्करण में लागू होता है। आंदोलन ने लोगों को समाज के गैर-धार्मिक पहलुओं से निपटने के दौरान भी अपने निजी जीवन में अणुव्रतों को लागू करने के लिए प्रोत्साहित किया। आंदोलन ने यह भी माना कि धर्म भविष्य के जीवन में खुशी सुनिश्चित करने के लिए नहीं, बल्कि वर्तमान जीवन में खुशी प्राप्त करने के लिए भी है।

'अणुव्रत' की गूंज देश ही नहीं दुनियां में भी हुई। लंदन की 'टाइम' पत्रिका ने भी 'अणुव्रत आंदोलन' की सराहना की।

'अणुव्रत' के नैतिकतामूलक कार्यक्रम को राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद, पंडित जवाहरलाल नेहरु, लोकनायक जयप्रकाश नारायण, आचार्य विनोबा भावे आदि का समर्थन मिला। आचार्य तुलसी ने 'नया मोड़' कार्यक्रम चलाकर दहेज, मृत्यु भोज, बाल विवाह, वृद्ध विवाह, पर्दा, अशिक्षा आदि सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध जागृति पैदा की।

आचार्य तुलसी ने सर्वधर्म सद्भावना और राष्ट्रीय उन्नयन के लिए भी कार्य किया। १९९३ ई. में राष्ट्रीय एकता के प्रयासों के लिए आपको 'इंदिरा गांधी राष्ट्रीय एकता पुरस्कार' से नवाजा गया। १९९५ ई. में महाराणा मेवाड़ फाउंडेशन उदयपुर द्वारा आपको 'हाकिम खां सूरी' सम्मान दिया गया। आचार्य तुलसी ने हिंदी और राजस्थानी भाषा में लगभग १०० ग्रंथों की रचना की। विश्व में शान्ति और अहिंसा की स्थापना के उद्देश्य से तीन अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन क्रमशः लाडनूं, राजसमन्द और लाडनूं में आयोजित किये गये। आप आशुकवि, उद्भट लेखक, शोधक, प्रगतिशील विचारों के धनी समाज सुधारक और रूढ़ियों के प्रबल विरोधी थे।

अणुव्रत के नियम समाज के सभी व्यक्तियों के लिए यथा व्यापारी, विद्यार्थी, अध्यापक, एडवोकेट, राजनीतिज्ञ, उद्योगपति, डॉक्टर, इंजिनियर आदि के लिए थे, सबको अपने-अपने कार्यों के अनुरूप आचरण कर समाज में नैतिकता का प्रसार करना आचार्य तुलसी के 'अणुव्रत' आंदोलन का उद्देश्य था।

आज उनके शिष्य आचार्य महाश्रमण के नेतृत्व में आंदोलन जारी है।

संस्थानः

१९४८ में आचार्य तुलसी ने पारमार्थिक शिक्षण संस्थान की स्थापना की, जो उन महिला उम्मीदवारों के लिए एक आध्यात्मिक प्रशिक्षण केंद्र था, जो जैन मठवासी जीवन शैली का नेतृत्व करना चाहती थी। 'जैन विश्व भारती संस्थान', एक शिक्षा और अनुसंधान संस्थान १९९१ में आचार्य तुलसी से प्रेरणा लेकर स्थापित किया गया।

परंपरागत रूप से जैन भिक्षुओं को विदेश यात्रा करने से मना किया गया है। दुनिया भर में जैन धर्म के उपदेशों को फैलाने के प्रयास में तुलसी ने १९८० के आसपास समान आदेश विकसित किया, यह आदेश दो अपवादों के साथ साधुओं और साध्वियों की जीवन शैली का अनुसरण करता है, उन्हें परिवहन के साधनों का उपयोग करने की अनुमति दी जाती है, उन्हें जो खाना बनाया जाता है उसे लेने की इजाजत होती है, इस आदेश को सामान्य परिवारों और जैन समणियों के बीच की कड़ी कहा जा सकता है।

एक भटकते तपस्वी के रूप में:

जैन मुनि और साध्वी जीवन भर पैदल चलने का प्रण लेते हैं। आचार्य तुलसी अपने जीवनकाल में ७०,००० किमी से अधिक की पैदल यात्रा की। उनकी प्रमुख यात्राओं में शामिल हैं:

१९४९: बीकानेर से जयपुर, दिल्ली, हरियाणा, पंजाब और वापस राजस्थान।

१९५५: राजस्थान से गुजरात, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश और वापस राजस्थान।

१९५८: राजस्थान से उत्तर प्रदेश, बिहार, बंगाल, फिर बिहार, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, हरियाणा और वापस राजस्थान। **शेष पृष्ठ ८ पर...**

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

पृष्ठ ७ से ... १९६६: राजस्थान से गुजरात, महाराष्ट्र, तमिलनाडु, पांडिचेरी, केरल, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, उड़ीसा, मध्य प्रदेश और वापस राजस्थान।

१९७४: राजस्थान से हरियाणा, दिल्ली, पंजाब और वापस राजस्थान।

१९८१: राजस्थान से हरियाणा, दिल्ली और वापस राजस्थान।

१९८७: राजस्थान से हरियाणा और दिल्ली और वापस राजस्थान।

इन यात्राओं के दौरान आचार्य तुलसी ने कई समुदायों के बीच सफल यात्रा की और अणुव्रत-उन्मुख जीवन का उपदेश दिया।

जैन एकता का आह्वान

आचार्य तुलसी ने विभिन्न जैन संप्रदायों के बीच सौहार्दपूर्ण सहयोग का प्रस्ताव रखा, इसके लिए उन्होंने 'समान सुत्तम' के प्रकाशन में आचार्य विनोबा भावे का समर्थन किया, जो सभी संप्रदायों द्वारा स्वीकार की गई पुस्तक है।

सम्मान:

- भारत के १९९८ के डाक टिकट पर आचार्य तुलसी का चित्र छपा।
- १९७१ में भारत के राष्ट्रपति वी. वी. गिरी द्वारा युग प्रधान की उपाधि
- भारत ज्योति पुरस्कार
- वाक्पति पुरस्कार
- १९९३ में राष्ट्रीय एकता के लिए इंदिरा गांधी पुरस्कार
- उनकी स्मृति में टॉडगढ़ गांव में महाशिला अभिलेख नाम का स्मारक बनाया गया है।
- तुलसी के जन्म के शताब्दी वर्ष पर २०१३ में जारी किए गए पांच भारतीय रुपये के मूल्यवर्ग के सिक्के।
- २० अक्टूबर १९९८ को उपराष्ट्रपति कृष्ण कांत ने आचार्य श्री तुलसी का एक भारतीय स्मारक तीन रुपये का डाक टिकट जारी किया। श्री कांत ने कहा था कि आचार्य तुलसी ने जैन धर्म के उच्च आदर्शों को एक नई और समकालीन दिशा दी।
- सिक्के: २०१४ में भारतीय रिजर्व बैंक ने आचार्य तुलसी की विशेषता वाले दो सिक्के, निकल-पीतल से बने पांच रुपये और २० रुपये जारी किए। तत्कालीन वित्त मंत्री पी. चिदंबरम ने बीकानेर में आचार्य तुलसी की जन्मशती के अवसर पर स्मारक सिक्के जारी किए।
- आचार्य तुलसी मार्ग: उत्तर हावड़ा की सबसे महत्वपूर्ण सड़क सल्किया स्कूल रोड का नाम बदलकर ९ फरवरी २०२० को तेरापंथ धर्म संघ के नौवें आचार्य गणधिपति आचार्य तुलसी के नाम पर रखा गया। कार्यक्रम का उद्घाटन सहकारिता मंत्री अरूप राय ने किया।

आचार्य तुलसी पुरस्कार

आचार्य तुलसी कृतृत्व पुरस्कार अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा दिया जाने वाला सम्मान है। यह पुरस्कार धर्म, महिला सशक्तिकरण, विज्ञान, शिक्षा, साहित्य, कला, सांस्कृतिक अध्ययन, प्रशासन, सामाजिक कल्याण आदि के क्षेत्र में किसी भी महिला या महिलाओं के **शेष पृष्ठ ९ पर...**

हीरे के दुश्मन कंकर पत्थर नहीं, धर्म के दुश्मन तो नकली हीरे हुआ करते हैं

- अन्तर्मना आचार्य श्री १०८ प्रसन्न सागर जी

कुलचाराम: भारत गौरव साधना महोदधि सिंहनिष्क्रिड़ित व्रत कर्ता अन्तर्मना आचार्य श्री १०८ प्रसन्न सागर जी महाराज एवं सौम्यमूर्ति उपाध्याय १०८ श्री पीयूष सागर जी महाराज ससंघ का पदविहार 'कुलचाराम' हैदराबाद की और अहिंसा संस्कार पदयात्रा चल रहा है। विहार के दौरान भक्तों को प्रवचन में कहा की हैं सच का कोई मुकाबला नहीं..

मगर आज झूठ की पहचान बहुत है..!

आज धर्म स्थलों पर प्रायः स्वार्थियों और व्यापारियों के अड्डे बन गए हैं, असली धर्म को हमने तिजोरियों में बंद कर दिया है और नकली पूरे बाजार में (संसार) घूम रहा है। कहा गया भी है ना, नकली सिक्के असली सिक्के को चलन से बाहर कर देते हैं, यही आज धर्म के साथ हो रहा है। असली धर्म - धर्म की आत्मा को तो, धर्म के ठेकेदारों ने कहीं छुपा रखा है और नकली धर्म पूरे बाजार में चल रहा है। याद रखना! धर्म के दुश्मन नास्तिक नहीं, बल्कि तथाकथित आस्तिक हैं जो धर्म को अपने स्वार्थ पूर्ति का साधन बना कर, उसे बेचने तक में संकोच नहीं करते।

हीरे के दुश्मन कंकर पत्थर नहीं है, धर्म के दुश्मन तो नकली हीरे हुआ करते हैं। कंकर पत्थर तो अलग ही पहचाने जाते हैं, नकली हीरो को पहचान पाना

किसी जोहरी का ही काम हो सकता है, हर किसी का नहीं। आज तो नकली हीरे में असली हीरे से भी ज्यादा चमक दिखाई दे रही है, मगर यह चमक कितने दिनों की है? चार दिनों की चांदनी फिर अंधेरी रात।

मुश्किल से मिलता है शहर में धर्म, यूँ तो कहने को हर इन्सान धर्मात्मा है...!!!

- नरेंद्र अजमेरा

पियुष कासलीवाल, औरंगाबाद

पृष्ठ ८ से ... संगठन द्वारा उल्लेखनीय योगदान को स्वीकार करता है, इस पुरस्कार की परिकल्पना २००३ में की गई थी और अब तक पुरस्कार पाने वालों में श्रीमती पूर्णिमा आडवाणी राष्ट्रीय महिला आयोग की तत्कालीन अध्यक्ष श्रीमती किरण बेदी भारत की पहली महिला पुलिस, श्रीमती सावित्री जिंदल हरियाणा की सांसद और एक प्रमुख उद्योगपति श्रीमती नीलिमा खेतान मुख्य कार्यकारी अधिकारी सेवा मंदिर, उदयपुर। १६वीं लोकसभा की पूर्व अध्यक्ष डॉ. सुमित्रा महाजन को समाज में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए २०१९ के लिए पुरस्कार विजेता के रूप में नामित किया गया।

आप आठ बार लोकसभा के लिए चुनी गई हैं, ऐसा करने वाले केवल तीन सदस्यों में से एक, आप सबसे लंबे समय तक सेवा देने वाली महिला सदस्य भी हैं। २०१४ के आम चुनावों में आपने ४,६६,९०१ वोट हासिल किए और मध्य प्रदेश में सबसे अधिक मतों के अंतर से एक सीट जीती।

प्रकाशनः

- प्रेक्षा ध्यान के माध्यम से व्यक्तित्व का रूपांतरण
- जैन सिद्धांत दीपिका
- उथियानो पमाये तव धाम समायरे
- सुधरे व्यक्ति समाज व्यक्ति से
- सनुवाद वायवरभाशायम
- प्रेक्षा ध्यान प्राण विज्ञान
- पिंड निर्युक्ति
- निशिहझयानी
- कापू
- काल करे सो आज करे
- ज्योत जले अब ज्ञान की
- जीतकल्प शभाष्य
- जैन आगम- वधाय कोशो
- जागो निद्रा त्यागो इसिभासियाई
- धर्म की लोहा जले हम
- धम्मो सुधस चिताई
- धम्मो सुधास चितई-६८
- धम्मो सरनमुत्तम-६९
- धम्मो सरनमुतामुम
- धम्म सरनाम पजामी
- ढाई अक्षर धर्म का
- दासाव
- भोर भई
- भगवान महावीर जीवन और दर्शन
- भगवई भाग
- अवसर के महंगे मोती
- आगे की सुध लिए

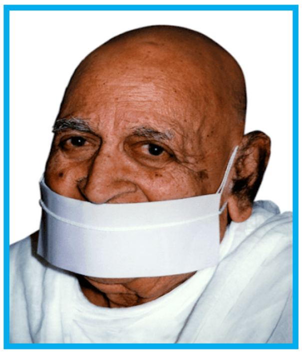

महाप्रयाण : १८ फरवरी १९९४ को आपने आचार्य पद से मुक्त होकर आचार्य महाप्रज्ञ को उत्तराधिकारी नियुक्त किया। २३ जून १९९७ को 'गंगाशहर' बीकानेर में आपने शरीर त्याग दिया और मोक्ष को प्रयाण कर गए।

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

श्री अनिल मीना रावत राष्ट्रीय उपाध्यक्ष एवं श्री इन्दर वीणा सेठी प्रदेश अध्यक्ष मनोनित

इन्दौर: भारत वर्ष की सर्वाधिक प्राचीन लगभग १३० वर्ष पुरानी एवं सर्वाधिक मान्यता प्राप्त एवं धर्म व समाज सेवा में अग्रणी संस्था भारतवर्षीय दिगम्बर जैन श्रुत संवर्धिनी महासभा दिल्ली ने, इंदौर म.प्र. के श्री अनिल मीना रावत को राष्ट्रीय उपाध्यक्ष एवं श्री इन्दर वीणा सेठी को प्रान्तीय अध्यक्ष मनोनित किया है। 'जिनवाणी' के प्रचार प्रसार, 'जिनवाणी' के रखरखाव व छात्रहित में सर्वाधिक छात्रवृत्ति प्रदान करने का गौरव इस संस्था के नाम है। इस मनोनयन पर राष्ट्रीय उपाध्यक्ष टी. के. वेद, तीर्थ संरक्षिणी महासभा के प्रान्तीय अध्यक्ष देवेन्द्र सेठी, अमित कासलीवाल (महावीर ट्रस्ट) राजकुमार पाटोदी, नरेन्द्र वेद (सामाजिक संसद) डॉ. जैनेन्द्र जैन, बाहुबली पाण्डया (वरिष्ठ पत्रकार) कैलाश वेद - डी. के जैन, अशोक

श्री अनिल मीना रावत

श्री इन्दर वीणा सेठी

बड़जात्या ने बधाई प्रेषित कर हर्ष व्यक्त किया है।

- टी. के. वेद, इंदौर
९४२५१५४७७७

अंतर्मना आचार्य श्री १०८ प्रसन्न सागर जी महाराज का ससंघ पदविहार तेलंगाना की भूमि में प्रवेश, तेलंगाना गुरु भक्तों में खुशी की लहर

तेलंगाना: साधना शिरोमणि अंतर्मना आचार्य श्री १०८ प्रसन्न सागर जी महाराज ससंघ निरंतर विहार करते हुए महाराष्ट्र, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश की भूमि से बिहार करते हुए 'तेलंगाना' की भूमि में प्रवेश किया। 'तेलंगाना' गुरु भक्तों में खुशी की लहर व्याप्त हुयी। चातुर्मास घोषणा कुलचाराम की गयी। आचार्य प्रसन्न सागर महाराज ने प्रवचन में कहाँ की आज का कड़वा सच तो यही है कि लोग धनपतियों को खूब इज्जत सम्मान देते हैं चाहे उनका चरित्र, इमान, इरादा और जीवन व्यसनों से क्यों ना परिपूर्ण हो..!

पापी, दुष्ट, अधर्म, दुष्कर्म करने वाले, मन्दिर में सम्मान पाने लगे हैं, धर्म के ठेकेदार अब मधुशाला जाने लगे हैं। काक अब कोयल की मज़ाक उड़ाने लगे हैं। यदि ऐसा चलता रहा तो हमें, हमारे पुरखे कभी क्षमा नहीं कर पायेंगे,, और आने वाली पीढ़ियां भी कभी माफ नहीं कर पायेगी। जैनी भाईयों अपनी पहचान, अपनी आन, बान, शान की मुस्तैदी से रक्षा करो। आदर्शों और बुजुर्गों से जो विरासत में मिला है, उस-की सार-सम्हाल करो तथा उसे और अधिक समृद्ध कर आने वाली पीढ़ियों को सौंप दो। जैन समाज एक अहिंसक, शाकाहारी और शान्ति प्रिय समाज है। पुरी दुनिया में हमारी यही पहचान है और यह पहचान हमें दो चार दिन में नहीं मिली बाबू... इस पहचान को बनाने में हमने सदियों तपस्याएं और साधनाएं की है, तब कहीं जाकर हम इस मुकाम को हासिल कर पाये हैं। आज हमारी पहचान को ही हमारे अपनों से खतरा पैदा हो गया है। हमारे वजूद पर संकट के बादल मंडरा रहे हैं। अनूप मण्डल जैसे और कितने मण्डल कुकुरमुत्तों की तरह डर से शांत बैठे हैं, अब हमें इस खतरे से आँख नहीं चुराना है, बल्कि इसका सख्ती से मुकाबला करना है। खतरा सामने आया हुआ देख कर आँख बन्द कर बैठ जाना और यह सोचना कि खतरा टल गया, तो ना समझी और नादानी की पराकाष्ठा होगी, और अभी हमारे समाज में यही हो रहा है। खतरा सिर पर है और हम पंथवाद, सन्तवाद, ग्रन्थ वाद एवं समाज वाद के मकड़जाल में उलझते जा रहे हैं, यही कारणों से हमारी नव पीढ़ी धर्म से गुमराह हो रही है, जैनत्व के मूल संस्कारों को समय के अनुसार खत्म करते जा रहे हैं।

समझदारों के लिये इशारा ही काफी है...!!!

- पियुष कासलीवाल, नरेंद्र अजमेरा
औरंगाबाद

'अहिंसा' और 'जैन एकता' हेतु सदा समर्पित
'जिनागम' यूं ही होती रहे पुष्पित-पल्लवित
अहिंसा
परस्परोपग्रहो जीवानाम
Only भारत बोलिए
SHAH PUBLICITY® SURAT
0261 - 2478910 / 98980 45678

100% Veg.

NAKODA

NOURISH

nakodagheetel

FRESHLY PRESSED

COLD PRESSED OILS

- Minimal Heating
- No Chemicals
- Manual Filtration
- 100% Natural

From the house of

NAKODA®

Pure Ghee, Edible Oils & More...

BOOK YOUR ORDER NOW

8928882457 / 8591562269 / 8928586181 / 9137756585

www.nakodagheetel.com   info@gheetel.com

FORTIFIED
SAMPOORNA POSHAN SWASTH JEEVAN

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

MAKE IN INDIA

fssai
Lic. No: 10017022005931

DAR KOSHER

एपीडा APEDA

An ISO 22000: 2018 & HACCP Certified Company

जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी का संक्षिप्त जीवन परिचय

आचार्य श्री महाप्रज्ञ (१४ जून १९२० - ९ मई २०१०) जैन धर्म के श्वेताम्बर तेरापंथ संप्रदाय के दसवें आचार्य प्रमुख थे। महाप्रज्ञ एक संत, योगी, आध्यात्मिक नेता, दार्शनिक, लेखक, वक्ता और कवि थे, आपने मात्र दस साल की उम्र में एक जैन भिक्षु के रूप में धार्मिक प्रतिबिंब और विकास के अपने जीवन की शुरुआत की। महाप्रज्ञ ने १९४९ में अपने गुरु आचार्य तुलसी द्वारा शुरू किए गए 'अणुव्रत आंदोलन' में एक प्रमुख भूमिका निभाई और १९९५ में आंदोलन के स्वीकृत नेता बने। आचार्य महाप्रज्ञ ने १९७० के दशक में सुव्यवस्थित 'प्रेक्षा ध्यान' प्रणाली तैयार की और 'साइंस ऑफ लिविंग' शिक्षा प्रणाली विकसित की, जो एक छात्र के संतुलित विकास और उसके चरित्र निर्माण के लिए एक व्यावहारिक दृष्टिकोण होता है।

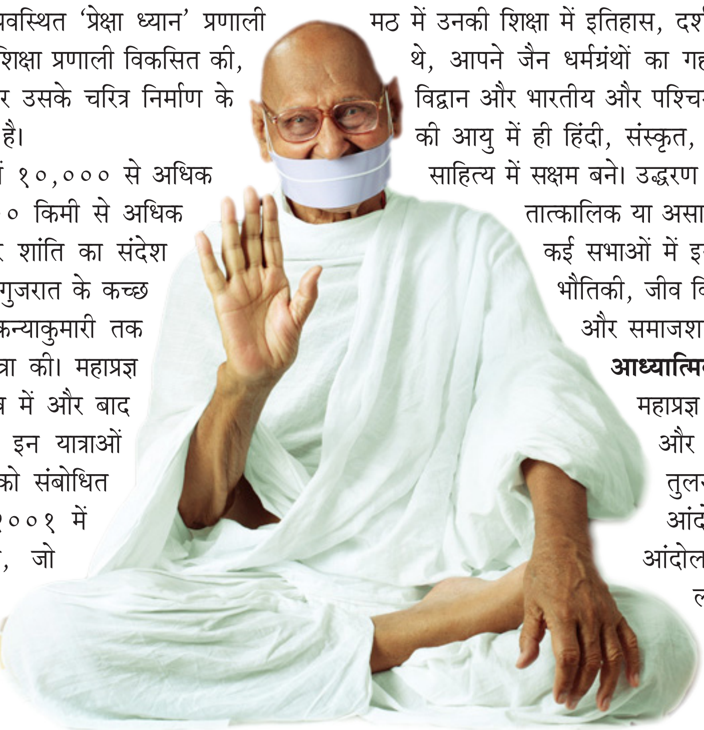

आपने अपने आध्यात्म जीवन काल में १०,००० से अधिक गांवों को कवर करते हुए १,००,००० किमी से अधिक की पैदल यात्रा की और सद्भाव और शांति का संदेश फैलाते हुए जनता तक पहुंचे। आपने गुजरात के कच्छ जिले से कोलकाता और पंजाब से कन्याकुमारी तक भारत की लंबाई और चौड़ाई की यात्रा की। महाप्रज्ञ ने यह यात्रा आचार्य तुलसी के नेतृत्व में और बाद में स्वयं आचार्य होने के साथ की, इन यात्राओं के दौरान आपने हजारों जनसभाओं को संबोधित किया। अहिंसा के दूत, महाप्रज्ञ ने २००१ में अहिंसा यात्रा आंदोलन शुरू किया, जो अहिंसा और सद्भाव को बढ़ावा देने के लिए २००९ तक जारी रहा।

प्रारंभिक जीवन

महाप्रज्ञ का जन्म राजस्थान के 'टमकोर' जैसे छोटे से गाँव में तोलाराम चोरड़िया और बालूजी के यहाँ हुआ था। आपके परिवार द्वारा आपको 'नथमल' नाम दिया गया, महज ढाई महीने की उम्र में ही आपने अपने पिता को खो दिया था, यह एक विस्तृत परिवार था और उसे परिवार के सभी सदस्यों का समर्थन प्राप्त था। नथमल की माँ को बच्चे से बहुत लगाव था, सभी ने आपका पालन-पोषण का ध्यान रखा, उन दिनों 'टमकोर' गाँव में कोई औपचारिक स्कूल नहीं था और आपने औपचारिक शिक्षा प्राप्त नहीं की, फिर भी आपने स्थानीय शिक्षक (शिक्षकों) से अक्षरों और गणित की तालिकाओं का पाठ किया। 'नथमल' की माँ धार्मिक महिला थी, जिन्होंने अपना खाली समय आध्यात्मिकता में बिताती थी। आपको धार्मिक गीत भी सुनाती थी, जो छोटे बच्चे पर छाप छोड़ता है, माँ की आध्यात्मिकता ने 'नथमल' को भी प्रेरित किया। 'नथमल' ने गाँव में आने वाले जैन भिक्षुओं से दर्शनशास्त्र का पाठ प्राप्त किया, आखिरकार 'नथमल' ने अपनी मां को संन्यास में दीक्षित होने की अपनी इच्छा से अवगत कराया। २९ जनवरी १९३१ को आप दस वर्ष की आयु में साधु बन गए। जैन श्वेताम्बर तेरापंथ के आठवें आचार्य कालुगणी ने आपको सरदारशहर, राजस्थान में भिक्षु बनने की दीक्षा दी, इससे नथमल 'मुनि नथमल' बन गए। आचार्य कालुगणी ने मुनि तुलसी की कक्षाओं के तहत 'मुनि नथमल' की पढ़ाई की व्यवस्था की, जो बाद में नौवें आचार्य बने। 'नथमल' ने मठ में जैन दर्शन के विभिन्न विषयों पर पाठ प्राप्त करना शुरू किया।

मुनि तुलसी के साथ, बच्चे के बौद्धिक विकास में तेजी आई और उसने हिंदी, संस्कृत, प्राकृत और राजस्थानी में हजारों उपदेश और छंदों को याद किया। मठ में उनकी शिक्षा में इतिहास, दर्शन, तर्कशास्त्र और व्याकरण शामिल थे, आपने जैन धर्मग्रंथों का गहन अध्ययन किया। जैन आगमों के विद्वान और भारतीय और पश्चिमी दर्शन के आलोचक बने। २२ वर्ष की आयु में ही हिंदी, संस्कृत, प्राकृत और राजस्थानी भाषाओं और साहित्य में सक्षम बने। उद्धरण वांछित. संस्कृत में आप एक विशेषज्ञ तात्कालिक या असाधारण कवि बने और बुद्धिजीवियों की कई सभाओं में इस कौशल का प्रदर्शन किया, आपने भौतिकी, जीव विज्ञान, आयुर्वेद, राजनीति, अर्थशास्त्र और समाजशास्त्र का भी अध्ययन किया।

आध्यात्मिक प्रयास (१९४५-१९७८)

महाप्रज्ञ ने २ मार्च १९४९ को अपने गुरु और जैन श्वेताम्बर तेरापंथ के आचार्य तुलसी द्वारा शुरू किए गए 'अणुव्रत' आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आंदोलन का अंतिम उद्देश्य आत्म-रूपांतरित लोगों के एक विश्वव्यापी नेटवर्क की मदद से एक अहिंसक सामाजिक-राजनीतिक विश्व व्यवस्था बनाना है, 'अणुव्रत' की स्थापना के बाद से इसने लाखों लोगों को 'अणुव्रत' की सामग्री की व्यक्तिगत तैयारी में पवित्रता और आत्म-अनुशासन का अभ्यास करने के लिए प्रेरित किया और आंदोलन में एक मुख्य सदस्य के रूप में काम किया। कई बार 'अणुव्रत' के सिद्धांतों की व्याख्या करके आचार्य तुलसी का प्रतिनिधित्व किया।

आचार्य श्री तुलसी ने लगभग २१ वर्षों तक ग्रुप लीडर (अग्रगण्य) रहने के बाद १९६५ में हिसार, हरियाणा में तेरापंथ के सचिव (निकाय सचिव) के रूप में मुनि नथमल को नामित कर दिया।

आगम अनुसंधान और संपादन

महाप्रज्ञ से परामर्श करने के बाद आचार्य तुलसी ने जैन आगमों का शोध, अनुवाद और व्याख्या शुरू करने का फैसला किया। महाप्रज्ञ के संपादकीय निदेशक होने के साथ आचार्य तुलसी के नेतृत्व में १९५५ में उज्जैन में काम शुरू हुआ। आचार्य तुलसी, महाप्रज्ञ और अन्य बौद्धिक भिक्षुओं और साध्वियों की संयुक्त गतिविधि ने हजारों साल पुराने विहित शास्त्रों के स्थायी संरक्षण की सुविधा शुरू की, यह पुराना साहित्य प्राकृत भाषा में है और इसके भाष्य या तो प्राकृत में उपलब्ध शेष पृष्ठ १३ पर ...

!! ॐ अर्हम् !!

जय तुलसी

आचार्य श्री तुलसी
महाप्रयाण दिवस
२४ जून

जय महाश्रमण

वर्तमानाचार्य श्री महाश्रमण

जय महाप्रज्ञ

आचार्य श्री महाप्रज्ञ
जन्म दिवस
०३ जुलाई

Hanuman Mal Giria

GIRIA PROJECTS PVT. LTD.

18, Rabindra Sarani, Poddar Court, Gate No.4,
6th Floor, Kolkata, West Bengal, Bharat-700001
Ph. : 033-22379304/05, Fax : 2237 9306
Mob. : 9831114752 | Website : giriagroup.com

पृष्ठ १२ से ... हैं या संस्कृत के साथ प्राकृत। बत्तीस आगम शास्त्रों का मूल पाठ निर्धारित किया गया और उनका हिंदी अनुवाद किया गया, उस पर विस्तृत टिप्पणियों ने उन्हें और अधिक रोचक और बोधगम्य बना दिया। आचार्य तुलसी द्वारा मौखिक प्रतिपादन के अनुसार किया गया यह कार्य पूरी तरह से गैर-सांप्रदायिक और खुले दिमाग द्वारा निर्देशित था और इसलिए अन्य संप्रदायों के प्रमुखों के साथ-साथ पूर्व और पश्चिम के बौद्धिक और प्राच्य विद्वानों द्वारा सम्मान के साथ देखा गया। आचारंग भस्म संस्कृत में आचारंग के लिए महाप्रज्ञ की भाष्य है, उन्होंने कई आगम रहस्यों को उजागर किया और इस भाष्य में मूल दर्शन और महावीर के दर्शन और दृष्टि को प्रस्तुत किया।

प्रेक्षा ध्यान प्रणाली का निर्माण

महाप्रज्ञ को ध्यान के चमत्कारों का एहसास होने लगा, वह आध्यात्मिक तकनीकों के साथ प्रयोग करने के लिए खुला था। आपने आचार्य तुलसी के साथ अपनी खोजों पर चर्चा की और उसके बाद महाप्रज्ञ ने ध्यान साधना के लिए अधिक समय देना शुरू कर दिया, ध्यान का गहन अभ्यास किया और विभिन्न तकनीकों के साथ प्रयोग किया। आपने जैन आगमों, प्राचीन शास्त्रों, योग विज्ञान, जीव विज्ञान, आधुनिक भौतिकी, प्राकृतिक चिकित्सा और आयुर्वेद आदि पर गहन शोध किया। २० वर्षों से अधिक के गहन अभ्यास के बाद, आपने सन १९७५ में 'प्रेक्षा ध्यान' प्रणाली तैयार की, आपने ध्यान प्रणाली को बहुत सुव्यवस्थित और वैज्ञानिक तरीके से तैयार किये, ध्यान प्रणाली के मूल पॉच पंखों को संक्षेप में प्रस्तुत किया जा सकता है - ध्यान, योगासन और प्राणायाम, मंत्र और चिकित्सा।

औपचारिक प्रशिक्षण शिविरों में 'प्रेक्षा ध्यान' प्रस्तुत करने से पहले महाप्रज्ञ ने नौ महीने की अवधि के लिए ध्यान और आध्यात्मिक परिश्रम का एक विशेष अभ्यास किया, जो ३ मार्च १९७७ को शुरू हुआ। पहला औपचारिक प्रेक्षा ध्यान शिविर बाद में १९७७ में आयोजित किया गया।

आचार्य महाप्रज्ञ ने 'प्रेक्षा ध्यान' में प्रशिक्षण के लिए सैकड़ों शिविर आयोजित किए। दुनिया भर में कई 'प्रेक्षा ध्यान' केंद्र संचालित हुए। जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय में 'प्रेक्षा ध्यान' पर अनुसंधान, विस्तार प्रशिक्षण और अध्ययन किया जाता रहा।

जीवन शिक्षा प्रणाली का विज्ञान

जीवन शिक्षा प्रणाली का विज्ञान मूल्य आधारित शिक्षा और नैतिक शिक्षा को लागू करने का एक प्रयास है, इसका लक्ष्य **शेष पृष्ठ १४ पर...**

पृष्ठ १३ से ... और दृष्टिकोण छात्र का समग्र विकास है न कि केवल बौद्धिक विकास। केवल बौद्धिक विकास छात्र के वास्तविक अनुभव और चरित्र के निर्माण में मदद नहीं कर सकता, इसका उद्देश्य संतुलित भावनात्मक, बौद्धिक और शारीरिक विकास करना है, यह केवल दर्शन की तुलना में व्यावहारिक प्रशिक्षण पर अधिक जोर देता है, मॉडल में योग, प्राणायाम, आसन, ध्यान, चिंतन तकनीक आदि शामिल हैं। जीवन विज्ञान की वैज्ञानिक तकनीक छात्र की भावनाओं को संतुलित करने में मदद करती है, यह शरीर में न्यूरो-एंडोक्राइन सिस्टम के संतुलित कामकाज में मदद करता है, यह भावनाओं के परिवर्तन, सकारात्मक दृष्टिकोण और व्यक्तित्व के एकीकृत विकास के लिए काम करता है।

आचार्य महाप्रज्ञ ने २८ दिसंबर १९७९ को जैन विश्व भारती, लाडनूं, राजस्थान में 'जीने का विज्ञान' के विचार की कल्पना की। महाप्रज्ञ ने साइंस ऑफ लिविंग एजुकेशन सिस्टम मॉडल विकसित किया। राजस्थान के नागौर जिले के शिक्षकों के लिए कई शिविर आयोजित किए गए। 'साइंस ऑफ लिविंग' को शिक्षा मंत्रालय और विभिन्न शैक्षिक समाज से सकारात्मक स्वागत मिलना शुरू हुआ। राजस्थान शिक्षा मंत्रालय ने शिक्षकों के प्रशिक्षण की सुविधा प्रदान की और शिविर शुरू किए गए। कुछ लोगों ने इस क्षेत्र में शोध शुरू किया। जीवन के विज्ञान के कार्यान्वयन को शुरू करने के लिए कुछ स्कूलों का चयन किया गया। स्कूलों में इसके लागू होने के एक साल बाद परिणाम आश्चर्यजनक और छात्रों के लिए बहुत सकारात्मक थे, जिसे भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय और राज्य सरकारों के साथ व्यापक स्वीकृति मिलने लगी, कई स्कूलों ने इसे अपने पाठ्यक्रम में शामिल करना शुरू कर दिया।

साइंस ऑफ लिविंग को छात्रों के भावनात्मक और समग्र विकास पर शिक्षकों, छात्रों और अभिभावकों से बहुत सकारात्मक प्रतिक्रिया मिली। प्रतिक्रिया में से कुछ को तनाव में कमी, अध्ययन में बेहतर दक्षता, बेहतर एकाग्रता और स्मृति, बेहतर क्रोध प्रबंधन आदि के रूप में संक्षेपित किया जा सकता है।

आचार्य तुलसी के उत्तराधिकारी बने ५ फरवरी १९९५ को

मुनि नथमल (बाद में महाप्रज्ञ) से प्रभावित होकर, आचार्य तुलसी ने उन्हें १२ नवंबर १९७८ को महाप्रज्ञ (अत्यधिक ज्ञानी) के गुणात्मक विशेषण से सम्मानित किया।

४ फरवरी १९७९ को 'महाप्रज्ञ' नाम आचार्य श्री तुलसी द्वारा परिवर्तित कर दिया गया और 'युवाचार्य' भी बनाया गया, जो वर्तमान आचार्य श्री के उत्तराधिकारी थे, आचार्य श्री के बाद दूसरा सर्वोच्च स्थान होता है, इस उन्नयन के साथ आपको युवाचार्य महाप्रज्ञ के रूप में जाना जाने लगा। एक युवाचार्य के रूप में महाप्रज्ञ संप्रदाय से संबंधित प्रमुख निर्णयों और गतिविधियों में आचार्य तुलसी के करीबी सहयोगी बन गए।

१८ फरवरी १९९४ को एक सार्वजनिक सभा में आचार्य श्री तुलसी ने घोषणा की कि अब महाप्रज्ञ को 'आचार्य' की उपाधि भी प्राप्त होगी और वह इस पद को तत्काल त्याग रहे हैं, इसके बाद ५ फरवरी १९९५ को महाप्रज्ञ को औपचारिक रूप से दिल्ली में एक सार्वजनिक सभा में तेरापंथ धार्मिक व्यवस्था के १०वें आचार्य - सर्वोच्च प्रमुख के रूप में प्रतिष्ठित किया गया। तेरापंथ में पदोन्नत होने के बाद, महाप्रज्ञ को कई जिम्मेदारियां मिलीं। अणुव्रत, प्रेक्षा ध्यान और जीवन विज्ञान के आंदोलनों को और तेज करना अब उनकी प्राथमिक चिंता बन गयी, इन सभी आंदोलनों को और बढ़ावा देने और उनके महत्व को रेखांकित करने के लिए महाप्रज्ञ द्वारा एक विकास परिषद का गठन किया गया।

जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय

आचार्य महाप्रज्ञ ने जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय, लाडनूं, राजस्थान की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, इसकी स्थापना १९९१ में आचार्य

जैन विश्व भारती
लाडनूं

श्री तुलसी के आध्यात्मिक संरक्षण में हुई थी। आचार्य महाप्रज्ञ ने १९९५ से इस विश्वविद्यालय के प्रमुख के रूप में कार्य किया। विश्वविद्यालय का उद्देश्य सामान्य रूप से और विशेष रूप से जैन परंपरा में प्राचीन भारतीय परंपराओं में छिपे सत्य और मूल्यों को पुनर्जीवित शेष पृष्ठ १५ पर...

!! ॐ अर्हम् !!

जय तुलसी | जय महाश्रमण | जय महाप्रज्ञ

आचार्य श्री तुलसी
महाप्रयाण दिवस
२४ जून

वर्तमानाचार्य श्री महाश्रमण

आचार्य श्री महाप्रज्ञ
जन्म दिवस
०३ जुलाई

Akhay Chand Baid
Mob: 09435021650
Nirmal Kumar baid
Mob: 09435021658

UDAYCHAND MULCHAND

North Bongaigaon, Acharya Shree Tulsi Marg,
BÞongaigaon, Assam-783380
Ph.: 03664-230554, 224744

जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!

पृष्ठ १४ से... करना है, यह विभिन्न विषयों में शोध करने और डॉक्टरेट की डिग्री हासिल करने के लिए मंच और बुनियादी ढांचा प्रदान करता है, इस विश्वविद्यालय का एक प्रमुख उद्देश्य अहिंसा और शांति, जैन धर्म, संस्कृत, प्राकृत, योग, ध्यान और साहित्य जैसे विषयों में साक्षरता का प्रसार करना है, वर्तमान में स्नातक और परास्नातक डिग्री के लिए नियमित डिग्री पाठ्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं।

अहिंसा यात्रा (२००१-२००९)

पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के साथ पूज्य श्री

दुनिया की समस्याओं ने आचार्य महाप्रज्ञ को गहराई से छुआ, जवाब में अहिंसा यात्रा के समाधान के साथ आए, अहिंसा के कारण को आगे बढ़ाने के लिए पैदल यात्रा, महाप्रज्ञ द्वारा ५ दिसंबर २००१ को राजस्थान के सुजानगढ़ में शुरू की गई। अहिंसा यात्रा के साथ आचार्य श्री का मिशन लोगों को अहिंसा और उसके व्यापक दृष्टिकोण को प्रशिक्षित करना और फैलाना है, अहिंसा की अनंत शक्ति में एक नया विश्वास जगाने का प्रयास है, इसका उद्देश्य सभी प्रकार की हिंसा की समस्याओं को तीव्र ध्यान में लाना है, मिशन नकारात्मक विचारों/भावनाओं को सकारात्मक दिशा में बदलने के लिए प्रशिक्षण प्रदान करना है। अहिंसा प्रशिक्षण का आध्यात्मिक पहलू अहिंसा की चेतना को प्रज्वलित करना और अहिंसा के मूल्यों को विकसित करना है, इसका व्यावहारिक पहलू आजीविका के लिए रोजगार प्रशिक्षण है।

हिंसा से दूर रहने और निर्दोष प्राणियों को मारने से परहेज करने का संकल्प के लिए राजनीतिक नेता, सामाजिक कार्यकर्ता और आध्यात्मिक नेता सलाह के लिए उनके पास आए। आप अपनी यात्रा राजस्थान से गुजरात, महाराष्ट्र, दमन, मध्य प्रदेश, हरियाणा, दिल्ली, उत्तर प्रदेश के कुछ हिस्सों, पंजाब और चंडीगढ़ तक ले गए, भारत के ८७ जिलों से गुजरे और २४०० से अधिक गांवों, कस्बों और शहरों को कवर किया जहां कई आध्यात्मिक और राजनीतिक नेताओं के साथ बैठकें कीं और सांप्रदायिक सद्भाव की अपील की। लगभग ४०,००० स्वयंसेवकों को उनके स्थानीय क्षेत्रों में विभिन्न जिम्मेदारियों के लिए सौंपा गया था, इस यात्रा ने किसानों और उन गांवों के आम और गरीब लोगों के सीधे संपर्क में आने की अनुमति दी, जहां वे गए थे। वे अपने मार्ग के सभी छोटे-छोटे गाँवों में रुके और खुली जनसभाएँ कीं, सार्वजनिक भाषण के माध्यम से, आचार्य श्री ने अहिंसा, बेरोजगारी उन्मूलन, नशीली दवाओं की लत, बुरी आदतों, सांप्रदायिक सद्भाव, स्वस्थ जीवन और सामंजस्यपूर्ण सामाजिक और व्यक्तिगत जीवन से मुक्त जीवन जीने के व्यापक दृष्टिकोण पर जागरूकता पैदा की। नशीली दवाओं की लत, बेरोजगारी और तनाव से पीड़ित परिवारों के साथ व्यक्तिगत संपर्क स्थापित करने के लिए अलग-अलग दिशाओं में स्वयंसेवक फैल गए। अहिंसा यात्रा ४ जनवरी २००९ को सुजानगढ़ में समाप्त हुई, उसी स्थान पर जहां से इसे शुरू किया गया था। भारत के राष्ट्रपति, डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने विशेष रूप से युवाओं के लिए समृद्ध और सामंजस्यपूर्ण जीवन के साथ एक पूर्ण विकसित सुंदर भारत की दृष्टि, प्रेरित प्रबुद्ध आध्यात्मिक और धार्मिक नेताओं ने सूरत में आचार्य महाप्रज्ञ के तत्वावधान में एक सम्मेलन का आयोजन किया। अब्दुल कलाम कॉन्क्लेव के दौरान चर्चा की गई कार्य योजना को प्रलेखित किया गया जिसे 'सूरत आध्यात्मिक घोषणा' के रूप में जाना जाता है।

एसएसडी कार्य योजना में 'पांच माला परियोजनाओं' की परिकल्पना की गई। चार परियोजनाओं का जोर अंतर-धार्मिक त्योहारों, बहु-धार्मिक परियोजनाओं, स्वास्थ्य देखभाल और रोजगार, स्कूलों में मूल्य आधारित शिक्षा को आत्मसात करने और धार्मिक/आध्यात्मिक प्रमुखों के बीच अंतरधार्मिक संवाद को प्रोत्साहित करने पर था, इन्हें निरंतर रूप से आगे बढ़ाने और सभी गतिविधियों के समन्वय के लिए धार्मिक/आध्यात्मिक नेताओं के साथ-साथ विद्वानों और प्रबुद्ध नागरिकों द्वारा प्रबंधित एक राष्ट्रीय स्तर के स्वतंत्र और स्वायत्त संगठन की स्थापना की गई, इस संगठन का नाम 'फाउंडेशन फॉर यूनिटी ऑफ रिलिजियस एंड एनलाइटेड सिटिजनशिप' रखा गया। जिसे तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने आचार्य महाप्रज्ञ के जन्मदिन पर १५ जून २००४ को राष्ट्रपति भवन, नई दिल्ली में शुरू किया।

शेष पृष्ठ १६ पर...

श्वेताम्बर जैन दिगम्बर
'जैन एकता' से ही जैन समाज का विकास
व सम्मान बढ़ेगा मिल कर कहें हम-सब जैन हैं
परस्परोपग्रहो जीवानाम्
विनित चांदवाड़
Mob: 9314037392, 9828021195
चांदवाड़ फाइनेन्स ब्रोकर/प्रॉपटीज़
श्रीमती ललिता देवी चांदवाड़ धर्मपत्नी स्व. बृजेश कुमार चांदवाड़,
वरूण-सोनिया, विनीत-रश्मि (पुत्र-वधु), वंश, रूहिका, भव्य, भावित,
चांदवाड़ परिवार, सिद्धार्थनगर, जयपुर
७६९, बोरडी की रास्ता, किशन पोल बाजार,
जयपुर, राजस्थान, भारत-३०२००४
निवास : ए-८६, सिद्धार्थ नगर, टोंक रोड,
जयपुर, राजस्थान-३०२०१७

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

पृष्ठ १५ से ... सूरत आध्यात्मिक घोषणा और अध्यक्ष डॉ ए पी जे अब्दुल कलाम के विजन २०२० के उद्देश्यों को जोड़ती है और एक गैर-लाभकारी संगठन है जिसे १५ आध्यात्मिक नेताओं द्वारा स्थापित किया गया।

आध्यात्मिक अभ्यास ध्यान

महाप्रज्ञ स्वयं ध्यान के महान अभ्यासी रहे, आपने इन विषयों पर विस्तार से लिखा भी है, आपने संन्यास की दीक्षा के साथ मंत्र और ध्यान का अभ्यास करना शुरू कर दिया, आपने ध्यान की गहराई से जाना शुरू कर दिया और इसके लिए अपनी गहरी रुचि को महसूस किया। आप घंटों तक इसका अभ्यास करते थे, आपके ध्यान के अनुभव के परिणामस्वरूप प्रेक्षा ध्यान प्रणाली का निर्माण हुआ।

आपने प्रतिदिन मंत्र जाप का भी अभ्यास किया और इसके समृद्ध अनुभव के साथ मंत्र विशेषज्ञ बन गए, आपने कहा कि अपने अनुभवों से मंत्र का अभ्यास लोगों को उनकी छिपी शक्तियों को जगाने में मदद कर सकता है। महाप्रज्ञ खुद को स्वस्थ रखने के लिए योगासन, प्राणायाम का अभ्यास करते थे। महाप्रज्ञ ने शाम के समय तीन घंटे से अधिक समय तक मौन रहते थे, महाप्रज्ञ अपनी दैनिक गतिविधियों और अपने सभी गतिविधियों जैसे चलने, खाने आदि के दौरान बहुत सचेत रहते थे।

साधुता के अनुशासन

महाप्रज्ञ ने दस साल की उम्र में भिक्षु बनने की दीक्षा के एक भाग के रूप में पाँच प्रमुख प्रतिज्ञाएँ लीं। ये महाव्रत अहिंसा (अहिंसा), सत्य (सत्य), चोरी न करने (अस्थेय), शुद्धता/ब्रह्मचर्य (ब्रह्मचर्य) और गैर-कब्जे/गैर-

आचार्य तुलसी का मिला आशीर्वाद

लगाव (अपरिग्रह) है। एक जैन मुनि (भिक्षु) के रूप में आपने पैदल ही यात्रा की, क्योंकि जैन मुनि जब तक चलने में असमर्थ न हो तब तक किसी वाहन का उपयोग नहीं कर सकता। वह एक स्थान पर अधिक समय तक नहीं रह सकता, उसे लगातार स्थान बदलना पड़ता है और वह केवल मालिक की अनुमति से ही घर में जा सकता है। कपड़े और भिक्षा के लिए एक कटोरी जैसी कुछ बुनियादी वस्तुओं के अलावा उनके पास कुछ भी नहीं होता।

आचार्य महाप्रज्ञ (नथमल)

नथमल ने २२ साल की उम्र में लिखना शुरू किया। आपने ३०० से अधिक पुस्तकें लिखीं, यह कार्य ध्यान और आध्यात्मिकता, मन, मानव मानस और उसके लक्षणों, भावनाओं की जड़ों और व्यवहार के माध्यम से अभिव्यक्ति, मंत्र साधना, योग, अनेकांतवाद, अहिंसा और जैन दर्शन और इतिहास से संबंधित हैं। आपकी मुख्य उपलब्धि आनुवांशिकी, डीएनए, हार्मोन और अंतःस्रावी तंत्र जैसे क्षेत्रों में आधुनिक जीव विज्ञान के निष्कर्षों के साथ कर्म और मानव व्यवहार की जैन अवधारणाओं को एक साथ लाने में थी।

अपनी पुस्तक 'आर्ट ऑफ थिंकिंग पॉजिटिव' में आपने नकारात्मक विचारों के मूल कारणों की खोज की और इसके परिवर्तन के लिए एक पद्धति प्रदान की, कुछ अन्य पुस्तक शीर्षकों में टुवर्ड्स इनर हार्मनी, आई एंड माइन, माइंड बियॉन्ड माइंड, मिस्ट्रीज ऑफ माइंड, न्यू मैन न्यू वर्ल्ड, मिरर ऑफ सेल्फ शामिल हैं।

महाप्रज्ञ ने 'प्रेक्षा ध्यान' की रचना की और इस विषय पर विस्तार से लिखा, इन पुस्तकों में आपने ध्यान की विभिन्न तकनीकों और मानस, शरीर विज्ञान, हार्मोनल प्रभावों, अंतःस्रावी तंत्र और तंत्रिका तंत्र पर अनेक प्रभावों का वर्णन किया, अनेकान्तवाद, गैर-निरपेक्षता और सापेक्षता के दर्शन पर व्यापक कार्य किया। तीर्थंकर महावीर द्वारा प्रतिपादित इस दर्शन के अभ्यासी जो इस बात की पुष्टि करता है कि ऐसी कोई समस्या नहीं है जिसे अनेकान्तवाद के प्रयोग से हल नहीं किया जा सकता, अनेकांत के साथ अपनी विचार प्रक्रिया को बेहतर बनाने और शांतिपूर्ण जीवन और सह-अस्तित्व के लिए इसका उपयोग करने के तरीके दिखाए, आपकी पुस्तक अनेकांता द थर्ड आई दर्शनशास्त्र के विवरण पर चर्चा करती है।

आपने जैन दर्शन पर कई पुस्तकें लिखी, जो कि जैन मान्यताओं और दृष्टि पर एक गंभीर सामग्री प्रदान करती हैं। जैन दर्शन मनन और मीमांसा इन रचनाओं में से एक है और एक शोध कार्य शेष पृष्ठ १७ पर...

पृष्ठ १६ से ... है जिसमें आचार्य महाप्रज्ञ ने विस्तृत व्याख्या के माध्यम से जैन विश्वास प्रणाली के कई गहरे पहलुओं को विस्तृत किया। एक और सटीक काम जैन धर्म की दार्शनिक नींव है। श्रमण महावीर पर जीवनी कृति है। महाप्रज्ञ ने अपने अनुभव और ध्यान में उपलब्धियों के माध्यम से महावीर को चित्रित करने का प्रयास किया। संबोधि महावीर और राजकुमार-भिक्षु मेघा कुमार के बीच एक लयबद्ध संरक्षण है, जिसमें महावीर बाद में ज्ञान देते हैं। महाप्रज्ञ ने आचार्य भिक्षु और आचार्य तुलसी के जीवन और दर्शन पर विस्तार से लिखा।

महाप्रज्ञ ने अपनी कविता के माध्यम से संस्कृत में बहुत बड़ा योगदान दिया, हिंदी में कविताएं और भजन भी लिखे, अश्रुविना, संस्कृत में मुकुलम और हिंदी में ऋषभयान उनकी कुछ काव्य रचनाएँ हैं।

आचार्य महाप्रज्ञ ने बड़ी स्पष्टता से लिखा, उनके वाक्य छोटे होते हैं और उनकी शैली सीधी होती है, आपने केवल सुझाव दिया अपने विचार को अपनाने हेतु मजबूर नहीं किया, भले ही अपने विश्वास पर जोर दिया, भाषा अभिव्यक्ति में भी सापेक्षता के प्रति सचेत किया। आपने अक्सर निष्क्रिय आवाज का सहारा लिया, जैसा कि एक अनुवादक ने एक बार कहा था, आपके लेखन में 'एक पूर्ण विराम और अगले वाक्य के बीच, एक साम्राज्य का निर्माण किया जा सकता है'।

विचारों

धर्म पर खड़े रहो आचार्य महाप्रज्ञ कहते हैं :

'वह धर्म जो मनुष्य के जीवन में परिवर्तन नहीं लाता, जो उसे शांति प्रदान नहीं करता, उसे कंधों पर बोझ के रूप में ले जाने के बजाय गंगा नदी में फेंक दिया जाना चाहिए, केवल अनुष्ठान या मूर्ति पूजा तब तक पर्याप्त नहीं होती जब तक किसी का आचरण नहीं बदल जाता। धर्म केवल मंदिरों, मस्जिदों या चर्चों तक ही सीमित नहीं रहे, बल्कि मनुष्य के दैनिक जीवन तक भी विस्तृत रहे।'

'मैं उस धर्म में विश्वास करता हूं जिसकी नींव में नैतिक मूल्य हैं और आध्यात्मिकता अपने चरम पर है। मैं उस धर्म में विश्वास नहीं करता जिसमें नैतिक मूल्य और आध्यात्मिकता नहीं, मैंने उस धर्म को स्वीकार किया जिसने मुझे शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक रूप से स्वस्थ बनाया। धर्म कर्मकांडों से परे होता है, यदि आप शुद्ध धर्म में विश्वास करते हैं तो धर्म में हमारी समस्याओं को हल करने की क्षमता है।'

आचार्य महाप्रज्ञ का महाप्रयाण ९ मई २०१० को दोपहर २:५२ बजे (८९ वर्ष की आयु) चुरू जिले के सरदारशहर में हुआ, जहाँ उन्होंने भिक्षुता प्राप्त की थी, इसके बाद आचार्य महाश्रमण को जैन तेरापंथ का ११वां आचार्य चुना गया। आचार्य महाप्रज्ञ ने आचार्य श्री महाश्रमण को १९९७ में गंगाशहर (बीकानेर) में तेरापंथ संप्रदाय का युवाचार्य बनाया था।

आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी की बौद्धिक रचनाएं

- परिवार और राष्ट्र
- ऋषभयान: पहले राजा की कहानी
- सम्बोधि
- सुख और दुख को समझना
- अपने आप को रूपांतरित करें
- खुद को बदलो: एक अस्थिर दुनिया में स्थिरता ढूँढना
- कर्मवादी
- यात्रा एक अकिंचन की
- मंत्र चिकित्सा
- न्यू मैन न्यू वर्ल्ड
- भक्तमार स्तोत्र: दिव्य हस्तक्षेप
- ध्यान क्यों करें
- सुखी और सामंजस्यपूर्ण परिवार
- शरीर और आत्मा
- प्रत्येक दिन के लिए सलाह
- मन के रहस्य
- भक्तांबर स्तोत्र
- तत्व-बोध
- अपने दिमाग को जगाएं
- प्रेक्षा ध्यान- दर्शन और अभ्यास
- मानसिक रंगों की प्रेक्षा ध्यान धारणा
- तेरापंथ जैन आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा साधना और सिद्धि
- जो सहता है वही रहता है
- जैन श्रावक कौन है
- विचारों को बदलना सिखें
- अध्यात्म की दुनिया में प्रवेश करें
- तब होता है ध्यान का जन्म
- सुखी परिवार समृद्ध राष्ट्र
- द सन विल राइज अगेन

!! ॐ अर्हम् !!

जय तुलसी

आचार्य श्री तुलसी
महाप्रयाण दिवस
२४ जून

जय महाश्रमण

वर्तमानाचार्य श्री महाश्रमण

जय महाप्रज्ञ

आचार्य श्री महाप्रज्ञ
जन्म दिवस
०३ जुलाई

Patrani

Himmat Barmecha
Mob. : 98302 37615
Narpat Bothra
Mob. : 8444078567
Patrani
Specialist in Embroidery
Sarees & Ghagra Chunni
72, Burtolla Street, Kolkata,
West Bengal, Bharat-700007
e-mail :- patranisaree2010@yahoo.in

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

महान समयज्ञ : आचार्य महाप्रज्ञ

आचार्य महाप्रज्ञ बीसवीं सदी के दूसरे दशक की समाप्ति के आस-पास इस वसुन्धरा पर आए। उनके जीवन का प्रथम दशक सामान्य रूप से बीता। दूसरे दशक के प्रारम्भ में वे मुनि बन गए। गुरु की कृपा से उनकी परवरिश का दायित्व उन हाथों में आया, जिन्होंने उनको मुनि नथमल से आचार्य महाप्रज्ञ बना दिया।

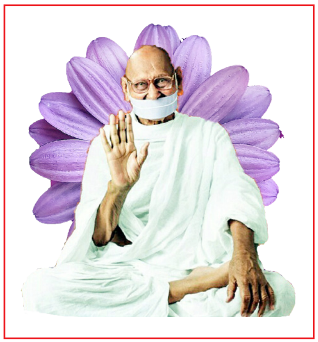

आचार्य महाप्रज्ञ का जन्म और जीवन दोनों विशिष्ट अर्हताओं से जुड़ा दर्शन है। आचार्य महाप्रज्ञ जन्म से महाप्रज्ञता लेकर नहीं आए थे, उनके वैशिष्ट्य का राज है उनका प्रबल पुरूषार्थ, अटल संकल्प, अखंड ध्येय, इसी से बंधी श्रद्धा और समर्पण की भाव चेतना जो स्वयं ऋचाएं बन गई।

आचार्य महाप्रज्ञ का सम्पूर्ण जीवन मानवीय अर्हताओं की सुरक्षा के लिए समर्पित रहा। आपका अतीत सृजनशील सफर का साक्षी रहा, जिसके हर पड़ाव पर शिशु की सहजता, युवा सी तेजस्विता, प्रौढ़ सी विवेकशीलता और वृद्ध सी अनुभव प्रवणता के पदचिन्ह अंकित रहे, ये पद चिन्ह गतिमय बन उन्हें दुर्लभ योग से मिलाया। आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ का योग संसार के दुर्लभतम संयोगों में एक था। अध्यात्म के क्षेत्र में भगवान महावीर और गणघर गौतम का योग बहुचर्चित रहा। दार्शनिक जगत में प्लेटो और अरस्तु का सम्बन्ध विश्रुत रहा, इसी प्रकार तुलसी-महाप्रज्ञ का योग बीसवीं-इक्कीसवीं शताब्दी का आदर्श बन गया। योग्य शिष्य गुरु को विश्व में प्रतिष्ठित कर देता है। तेरापंथ की प्रगति के हर आरोह-अवरोह में महाप्रज्ञ ने अपने गुरु आचार्य तुलसी के सधे हुए द्रुतगामी कदमों का साथ निभाया। विश्व क्षितिज पर आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ जैसी आध्यात्मिक विभूतियां गुरु-शिष्य के रूप में शताब्दियों के बाद ही प्रकट होती हैं।

आचार्य महाप्रज्ञ का अनुपम व्यक्तित्व स्वभाव से विनम्र, चरित्र से निर्मल-पारदर्शी होने के साथ अनमोल समरसता, प्रकाण्ड विद्वता, असीम मौलिकता, प्रखर प्रशासनिक क्षमता, कर्म की ऋजुता, भावों की मृदुता, चिन्तन की सार्वभौमिकता, कार्य की सार्वकालिकता यथार्थ के गगन में निर्श्रता लिए हुए था। पुरूषार्थ के धनी, अध्यात्म प्रहरी, महान विचारक, गहन चिंतक, कुशल वाग्मी के रूप में आचार्य महाप्रज्ञ भारत धरती के शिखर रहे हैं। सरल हृदय, सौम्य आकृति प्रकाशमय आभामण्डल तथा करुणा के रत्नाकर आचार्य महाप्रज्ञ का जीवन दर्शन जन-जन के लिए प्रेरणादायी रहा। समय से पहले ही किसी भी स्थिति व वस्तु के विश्लेषण करने की अपूर्व व अद्भुत क्षमता ने उन्हें समयज्ञता की कसौटी पर खरा साबित किया।

आचार्य महाप्रज्ञ अहिंसा, शान्ति, सद्भावना, विश्व मैत्री और अनेकान्तवाद के पर्याय थे, वे एक ओर ध्यान योगी थे तो दूसरी ओर अद्भुत तर्क शक्ति के अमित भण्डार थे, आपका समग्र जीवन साधना, संयम एवं समाधि का चरम निदर्शन था।

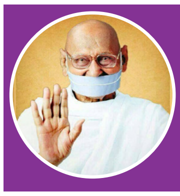

।। ॐ अर्हम् ।। ।।श्री गुरुवेनमः ।।

जय भिक्षु जय महाश्रमण जय तुलसी

तेरापंथाचार्य महाप्रज्ञ जी के जन्म दिवस पर गुरुवर के चरणों में कोटि-कोटि वंदन

Dr. V. S. Baid
(PULMONOLOGIST)
Mob. : 9831082034

CA Chanda Baid
Mob. : 9831533450

Dr. Mayank Baid
(Urologist)
Mob. : 9883212610

Dr. Ruchi Jain Baid
(Obs & Gynae)IVF Specialist
Mob. : 7877574734

Dr. Mahak Baid
(Orthopaedics)
Mob. : 9830508578

Dr. V S Baid's Chest & Allergy Clinic

Chamber : 36/2A, Ram Krishna Samadhi Road, Kankurgachi, Kolkata, West Bengal, Bharat-700054

lake District, 74 &74/1 Narkeldanga Main Road, Block-5, Lobby-2, Flat- 9E & 10E, Kolkata, West Bengal, Bharat-700054

'अहिंसा' और 'जैन एकता' हेतु सदा समर्पित
'जिनागम' यूं ही होती रहे पुष्पित-पल्लवित

Kishanlal Nahata Jain
Uttam Chand Nahata Jain
Kewalchand Nahata Jain
Manakchand Nahata Jain
Manoj Nahata Jain
Sanjay Nahata Jain
Amit Nahata Jain
Piyush Nahata Jain

RCN Construction Company Pvt Ltd
UCN Construction Company Pvt Ltd

R. K. Path, Itachali, Nagaon, Assam, Bharat-782001
दूरध्वनि : 03672-231472 / 84 Fax : 03672-233806
भ्रमणध्वनि. 09435061677 अणुडाक : rj.group@yahoo.com

हाय, हैलो छोड़िये, जय जिनेन्द्र बोलिए!

Ideal place for
Marriages, Conferences & Relaxation
Khanvel RESORT
SILVASSA
09320023557
09824056861
022-26352635
022-26305555
follow us on:
/thekhanvelresort
/khanvelresort
www.khanvelresort.com
sales@khanvelresort.com

!! ॐ अर्हम् !!
जय तुलसी
जय महाप्रज्ञ

आचार्य श्री तुलसी
महाप्रयाण दिवस
२४ जून

आचार्य श्री महाप्रज्ञ
जन्म दिवस
०३ जुलाई
जय महाश्रमण

वर्तमानाचार्य श्री महाश्रमण
ARHAM POLYCHEM PVT. LTD.
2, Raja Woodmount Street, 3rd Floor,
Kolkata, West Bengal, Bharat-700001
Tel. : 033-22434400
Email : arham.kka@gmail.com

जैन एकता' से ही जैन समाज का विकास व सम्मान बढ़ेगा
मिल कर कहें हम-सब जैन हैं
Samrat Jewellers SJ
नवग्रह रत्नों के व्यापारी
मणिक, मोती, मूंगा, पन्ना, पुखराज, हीरा,
नीलम गोमेदक, लहसुनिया, नवग्रह रत्न अपनी राशी के
अनुसार रत्न धारण करने से हर समस्या दूर होकर,
स्वास्थ लाभ, समुद्र शाली, व हर क्षेत्र
में सफलता प्राप्त होती है
हमारे यहां सभी राशियों के रत्न हमेशा उपलब्ध रहते हैं
एक बार अवश्य संपर्क करें
अनोखीलाल नाहर जैन पंकज नाहर जैन
३१ - ए कीर्तिकर मार्केट, दादर (पश्चिम), मुम्बई,
महाराष्ट्र, भारत - ४०००२८ फोन ०२२-२४३०६६४२
मो: ९८९२८०५०६९
www.samratjewellers.com

!! ॐ अर्हम् !!
जय तुलसी जय महाश्रमण जय महाप्रज्ञ

आचार्य श्री तुलसी
महाप्रयाण दिवस
२४ जून

वर्तमानाचार्य श्री महाश्रमण

आचार्य श्री महाप्रज्ञ
जन्म दिवस
०३ जुलाई
Bimal Bhansali
Mob: 9312243811
Nikhil Bhansali
Mob: 9990713090
BP
Bhansali Polytech
(A Unit of Injection Moulding)
F-119/2, Sector- 3, Dsiidc, Bawana, Delhi-110039
E-mail: bhansalipolytech@gmail.com

।। ॐ अर्हम् ।। ।।श्री गुरूवेनमः ।।
आचार्य भिक्षु वर्तमानाचार्य महाश्रमण आचार्य तुलसी
तेरापंथाचार्य महाप्रज्ञ जी के जन्म दिवस पर गुरुवर के चरणों में कोटि-कोटि वंदन
पंकज चोपड़ा अमित चोपड़ा
Mob. : 9709714884 Mob. : 9708739660
चोपड़ा वस्त्रालय
सूटिंग-शर्टिंग, फैन्सी साड़ियाँ, स्कूल ड्रेस समीज सलवार एवं
अन्य सभी ड्रेस मेटेरियल्स का एक मात्र प्रतिष्ठान
नरहिया बाजार, जि. मधुबनी, बिहार, भारत-८४७१०८

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

अपनी आदतों के अनुसार चलने में, इतनी गलतियाँ नहीं होती.. जितनी दुनिया का ख्याल और लिहाज रखकर चलने में होती है..!

- अन्तर्मना आचार्य श्री १०८ प्रसन्न सागर जी

औरंगाबाद: साधना महोदधि सिंहनिष्क्रिड़ित व्रत कर्ता अन्तर्मना आचार्य श्री १०८ प्रसन्न सागर जी महाराज एवं सौम्यमूर्ति उपाध्याय १०८ श्री पीयूष सागर जी महाराज ससंघ का पदविहार कुलचाराम हैदराबाद की और अहिंसा संस्कार पदयात्रा के दौरान भक्त जन को प्रवचन में कहा की

अपनी आदतों के अनुसार चलने में, इतनी गलतियाँ नहीं होती..
जितनी दुनिया का ख्याल और लिहाज रखकर चलने में होती है..!

इसलिए स्वयं को सुधारने का मार्ग है सन्यास। दीक्षा या सन्यास सिर्फ वेश परिवर्तन का नाम नहीं है, बल्कि यह तो भाव परिवर्तन का पुरूषार्थ, आत्म ज्योति के दीप के दीपित होने का पावन पुनीत अवसर, पशुता के भावों का क्षयण का उपक्रम, परिणामों का परिवर्तन और दीक्षित परिणामों का सदैव सुमिरन का सर्वोत्तम प्रसंग है।

दीक्षार्थी या सन्यासी हर पल आत्मालोचना का अन्तःकरण से उद्भूत अभ्यास यह चिन्तन करता है कि यदि किन्चित भी विकृति हो जाये मन में, तो उसी क्षण ही हो जाये, विकृत भाव का परिमार्जन/ संशोधन के साथ पुरूषार्थ की कलिकाल की यह साधना मुक्ति प्रदायक होगी, भव-भव का यह पुरूषार्थ कभी व्यर्थ नहीं जायेगा। जन्म-मृत्यु के चक्र जाल से मुक्त होगी और विहार करेगी स्वतन्त्रता के उन्मुक्त गगन में। दीक्षार्थी साधक की सम्यक्त्व को समर्पित सच्ची भावना का उपादान और दीक्षा प्रदायक गुरू

का अनुग्रह दोनों का जब युग्म होता है, तब दीक्षा सम्पन्न होती है, शिष्य की सुषुप्त शक्ति को जगाने का निमित्त सृजित होता है।

दीक्षा के समय दीक्षार्थी को उतना पता नहीं चलता कि इस रूपांतरण से क्या मिला है-? परन्तु जब दीक्षार्थी रत्नत्रय की साधना में रमता है, वीतराग की भक्ति के भजन से, मन आँगन को सींचता है, अपनी सच्ची श्रद्धान को आत्म-स्वरूप के चिन्तन-मनन में समर्पित करता है, तब दीक्षा पनपती है, समृद्ध होती है और प्रस्थान करती है, देह से विदेह की साधना पथ पर। सिर मुण्डन, कैशलोंच के साथ, मन का मुण्डन भी होता है। इन्द्रियों को वश में किया जाता है एवं वस्त्र त्याग के साथ, विकारों को पूर्ण रूपेण हटाया जाता है...!!!

- नरेंद्र अजमेरा
पियुष कासलीवाल, औरंगाबाद

VALUE COUNTER MODEL - KM 9014A
UPDATES WITH NEW NOTES
NEW PRODUCT

FEATURES :
• Automatic start, stop and clear.
• With Batch, Add and Self-checking functions.
• UV, MG, IR and MT counterfeit detection.
• Automatic half-note, chained note detecting.
• Double-note detecting with IR.
• LCD turns red when detects fake note.

SPECIFICATIONS :
• Counting Display : 4 digits
• Batch Display : 3 digits
• Counting speed : 1000pcs/min
• Hopper Capacity : 300 notes
• Stacker Capacity : 200 notes
• Size of countable note : 50*110-90*190mm
• Power Supply : AC220V±10% 50Hz
• Power Consumption : ≤ 80W
• Size of box : 375*333*251 mm

KUSAM-MECO® An ISO 9001:2015 Company
Shop No. 18, 1st floor, CIDCO Shopping Complex, Plot No 9, Sector-7, Rajiv Gandhi Marg, Sanpada,Navimumbai-400705. INDIA. Tel.: 022-27754546, 27750662 / 0292
Email :sales@kusam-meco.co.in Web : www.kusamelectrical.com

तीर्थंकर महावीर एक परिचय

सत्य अहिंसा अनेकान्त के महानायक	- तीर्थंकर महावीर
आत्मा विज्ञान के विद्वान	- तीर्थंकर महावीर
अहिंसा के मुर्धन्य व्याख्याकार	- तीर्थंकर महावीर
मानवता के मसीहा	- तीर्थंकर महावीर
सर्वोदय तीर्थ के प्रणेता	- तीर्थंकर महावीर
विलक्षण विचारों के अग्रणी चेता	- तीर्थंकर महावीर
बौध्दिक जागृति के अग्रणी चेता	- तीर्थंकर महावीर
सामाजिक परिष्कार के सर्वसामान्य नेता	- तीर्थंकर महावीर
विश्वमंगल के पावन प्रेरणा स्त्रोत	- तीर्थंकर महावीर
विश्व शांति के संरक्षक	- भगवान महावीर
आत्मध्यान के संरक्षक	- भगवान महावीर
समता के प्राणपुरूष	- भगवान महावीर

- महेश नाहटा, नगरी

प्रेरणा पुंज आचार्य तुलसी - विजयराज सुराणा प्रबुद्ध पाठक 'जिनागम'

पिछली दो-तीन शताब्दियों में हुए ऐसे अनेकों चयनित महापुरुष, जिन्हें अगली कई शताब्दियों तक आदर्श के रूप में स्मरण किया जायेगा एवं जिनके दिये गये अवदानों व पदचिह्नों पर व्यक्ति चलने का प्रयास करता रहेगा, ऐसे महापुरुषों में एक नाम है 'आचार्य तुलसी'।

संक्षिप्त परिचय में तो कहने को वे जैन धर्म के एक सम्प्रदाय 'तेरापंथ' के नवम आचार्य थे, परन्तु कार्यो तथा उनके परिणाम व अर्थ इतने विशाल थे, कि वे अपने सम्प्रदाय के घेरे से निकलकर युगप्रधान आचार्य बन गये, विश्व मानव बन गये, जिससे मानवता ने त्राण पाया। महान व्यक्ति का मापदण्ड यह नहीं है कि उसने कितनी धन-सम्पत्ति अर्जित की एवं उससे कितने बड़े व आलीशान मकान बनाये, बल्कि महापुरुष होने की सुगन्ध उसमें आती है की जिसने अपने प्रेरक व्यक्तित्व से कितने लोगों को अच्छाई के लिये प्रेरित किया, जो स्वयं समाज के लिये उपयोगी एवं समाज के अन्य लोगों के लिये आदर्श बन सके।

विद्वता व मानवीय गुणों के धनी आचार्य तुलसी ने हजारों-हजारों व्यक्तियों को आकर्षित किया और अहिंसा, सत्य व नैतिकता आदि सद्गुणों से आप्लावित कर उसे आदर्श जीवन का मार्गदर्शन दिया, एक-एक व्यक्ति को आकर्षित कर उन्हें अपना बनाने की कितनी कला थी, उसके मैं कुछ संस्मरण देना चाहूंगा-

बजाज समूह की अखिल भारतीय कहानी प्रतियोगिता में मुझे प्रथम पुरस्कार मिला। प्रसन्नता के आवेग में यह बात मेरे पिताजी ने आचार्य तुलसी को भी बताई, एक रात आचार्य प्रवर ने मुझे अणुव्रत के बारे में काफी कुछ बताया, समझाया एवं दूसरी रात इस क्रम में मुझे कहा कि तुम्हें तो लिखने का शौक है, 'अणुव्रत' के बारे में एक लेख लिखकर लाओ। गुरु का आदेश, मैंने प्रफुल्लित होकर, अपनी क्षमता व भावना के अनुरूप लेख तैयार कर पूज्यवर को दिखाया, लेख देखकर बोले, कल तुम्हें इसे प्रवचन में पढ़कर सुनाना है, दूसरे दिन अपने प्रवचन से पहले, मेरी कहानी प्रतियोगिता की बात बताकर मुझे 'अणुव्रत' के बारे में बोलने का आदेश दिया। लेख हृदयंगम था, मैंने अणुव्रत के सम्बन्ध में कुछ प्रस्तुति दे दी। एक तीर से तीन-चार निशाने लगे-

(१) मैंने कहानी लिखी थी, लेख भी लिख दिया, कुछ हौसला खुल गया एवं बाद में लिखने लग गया।

(२) प्रवचन में पहली बार बोलकर स्वयं को गौरवान्वित तो महसूस किया ही, अवसर आने पर बोलने व भाषण देने की कला विकसित होने लगी।

(३) 'अणुव्रत' के बारे में जानकर धीरे-धीरे 'अणुव्रत' कार्यक्रमों व काम से जुड़ने लगा।

(४) इन सबकी वजह से मैं सभा-संस्थाओं से जुड़कर सम्मानित कार्यकर्ता बनने की ओर अग्रसर होने लगा।

इससे जाना जा सकता है कि महान व्यक्ति के सोच से एक अदने से अनजान किशोर को किस तरह से एक मामूली सा इंगित देकर, संकरी गली से चौराहे पर ला दिया।

अगला संस्मरण बहुत ही रोचक व व्यक्तिगत है-

मेरा बचपन का नाम विजय सिंह था। पड़िहारा में मेरी हम उम्र यानि २-३ साल के फर्क के विजयसिंह नाम के सात लड़के थे एवं सभी सुराणा। आचार्यप्रवर 'पड़िहारा' में ही विराजित थे एवं कार्यवश मुझे बुलाने हेतु किसी श्रावक को कहा तो उसने पूछ लिया- ''कौन सा विजयसिंह''। आचार्य प्रवर उसकी तरफ देखने लगे, तो उसने कहा यहां पर सात विजयसिंह हैं, आप किसे याद फरमा रहे हैं। बाद में जब मैंने दर्शन किये तब फरमाया ''यह क्या झमेला है, इससे तुम्हारी पहचान कैसे बनेगी।'' मेरे पास भी जवाब नहीं था, उनकी ओर ही निहारता रहा। दो-तीन मिनट सोचकर पुन: बोले ''ऐसा करो तुम अपना नाम 'विजयराज' परिवर्तित कर लो।''

लाखों व्यक्तियों के संघ के सम्बन्ध में सोचने वाला व चलाने वाला एक साधारण से युवक के बारे में इतना सोचे व परामर्श देवे, ऐसा किसी महान व्यक्ति का ही चिंतन हो सकता है। मैं नतमस्तक हो **शेष पृष्ठ २२ पर...**

!! ॐ अर्हम् !!

जय तुलसी | जय महाश्रमण | जय महाप्रज्ञ

आचार्य श्री तुलसी
महाप्रयाण दिवस २४ जून

वर्तमानाचार्य श्री महाश्रमण

आचार्य श्री महाप्रज्ञ
जन्म दिवस ०३ जुलाई

Mansukh Dugar
Mob: 9810136731

Get your accounts systematic & according to Law

MSD & Company

Msd is a group of dedicated professionals with 27 years of on job experience in the field of account related services.
We at Msd are committed to take complete charge of your account vertical, including statutory/timely compliance of GST, INCOME TAX ,TDS etc.
Besides the regular account services, we also provide solution for pending account related issues, and merge the same with existing system.
Objective is to have seamless accessibility and ease of operation.
In nutshell, we are a one stop shop for your accounting needs.
Thanking you and assuring you of our keen desire to be of service to you

A- 776/2, 1st Floor, Near Jain Sthanak Mandir,
Shastri Nagar, Delhi- 110052
OFFICE:-+911146576290 +91 8800836732
Email: msdcompany01@gmail.com, mdpushpak@gmail.com

राजाबाजार जैन मंदिर में हुआ काले का सत्कार

औरंगाबाद-महाराष्ट्र: राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने हाल ही में देहरादून स्थित इंदिरा गांधी राष्ट्रीय वन अकादमी में आयोजित समारोह में सर्वोत्तम संवाद तथा वक्तृत्व कौशल का प्रथम पुरस्कार नाशिक निवासी यश सुमेर कुमार काले (आईएफएस) को प्रदान किया, राजाबाजार स्थित खंडेलवाल दिगम्बर जैन मंदिर, पंचायत कचनेर क्षेत्र, जटवाड़ा क्षेत्र, गुरु परिवार पुलक मंच, पीयू विद्यालय आदि की ओर से यश काले को शाल, नारियल, पुष्प देकर ललित पाटनी, सचिव अशोक अजमेरा, उपाध्यक्ष विनोद लोहाडे, नरेंद्र अजमेरा, रमेश पाटणी, आदित्य सोनी, कैलाश पाटणी, डॉ आर सी बडजाते, एम आर बडजाते, किरण पहाडे, मानिकचंद गंगवाल, अमोल पाटणी, महावीर पाटणी, मानिकचंद पांडे, दिपक पहाडे, राजाभाऊ पहाडे, अशोक गंगवाल, भरत ठोले, पियुष कासलीवाल आदि ने सत्कार किया। संचालन सचिव अशोक अजमेरा ने किया, वह राज्यकर आयुक्त व न्यायाधिकरण सदस्य सुमेर काले व महामंत्र गजपंथा सिद्धक्षेत्र सुवर्णा काले के पुत्र हैं।

- पीयूष कासलीवाल

पृष्ठ २१ से... गया। कहना नहीं होगा कि मैंने उनके आर्शीवाद से कुछ समय बाद ही अपना नाम विधिवत 'विजयराज' परिवर्तित कर लिया। मुझे समाधान भी मिला गुरु का आर्शीवाद फलित भी हुआ।

एक घटना का विवरण और प्रस्तुत करना चाहूंगा, सन् १९७४ का चातुर्मास 'दिल्ली' में था। जयाचार्य जी की शताब्दी वर्ष का अवसर था। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् ने जयाचार्य जी की शताब्दी पर एक स्मारिका 'जय स्मृति' के नाम से प्रकाशित करने का निर्णय लिया, जिसका दायित्व मुझ पर था। स्मारिका गोविन्दजी बाफणा की प्रेस में छप रही थी एवं मेरे अच्छे सहयोगी थे, हम दोनों उस स्मारिका में तेरापंथ के सभी नौ आचार्यों की फोटो छापने का निर्णय लिया, परन्तु समस्या यह थी कि तृतीय आचार्य रायचन्दजी व पंचम आचार्य मघवागणी का उस समय कोई प्रचलित फोटो उपलब्ध नहीं था, हम दोनों ही किंकर्तव्यमूढ थे कि क्या किया जाये? आचार्य प्रवर से समस्या निवेदित की, आंख मूंदकर कुछ सोचकर कुछ देर बाद बोले, अन्य ४-५ आचार्यों की कैसे हुई, वैसे ही हो सकती है, हम पूरा तो नहीं समझ पाये परन्तु कुछ सूत्र मिल गया, उसी स्मारिका में सभी सन्तों की उपलब्ध फोटो भी छाप रहे थे, उन सैकड़ों सन्तों की फोटो में से ४-५ पसन्द की गयी फोटो में से समायोजित करके आचार्य रायचन्द व आचार्य मघवागणी की फोटो तैयार कर, उस स्मारिका में छापने का निर्णय लिया, उन दोनों समायोजित फोटो को कुछ डरते-डरते एवं मन में कई शंकायें लेते हुए एक रात मैंने आचार्यप्रवर को अकेले में निवेदित किया। कुछ देर उन्हें देखते ही रह गये एवं हास्ययुक्त प्रफुल्लता से हमारी करतूत को सराहा व आशीर्वाद दिया, जिसकी हम कल्पना नहीं कर सके थे, यह बताते हुए मुझे गौरव होता है कि सभी नौ आचार्यों की हर पेज में एक-एक फोटो पहली बार उसी स्मारिका में छपी थी, उसके बाद तो वही सब फोटो प्रचलित हो गई। आचार्य श्री का दिया हुआ सूत्र किस तरह दिमाग में रेखांकित होकर, चित्रमय हो गया, यह उनके आर्शीवाद व महानता का ही फल है।

मेरे प्रेरणा पुंज, पूज्य गुरुदेव को उनके शताब्दी वर्ष पर हृदयाशिक्त शत: शत: वंदन।

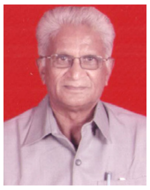

- विजयराज सुराणा
९१६२ बगीची लेन
विश्वासनगर, दिल्ली -११००३२
भ्रमणध्वनि: ९८६८८०७६८३

।। ॐ अर्हम् ।।

जय तुलसी **जय महाश्रमण** **जय महाप्रज्ञ**

आचार्य श्री तुलसी
महाप्रयाण दिवस
२४ जून

वर्तमानाचार्य श्री महाश्रमण

आचार्य श्री महाप्रज्ञ
जन्म दिवस
०३ जुलाई

Sudip Jain
Mob: 9743019500

Jain Infoways

Authorized Distributors For Seagate HDD & SSD,
Western Digital HDD & SSD, Dell Displays, LG Displays & Synology NAS

#11, GR Floor, P M Krishnappa Road, 1st Cross,
S J P Road Cross, Bengaluru, Karnataka, Bharat - 560002
Ph. : 080 - 41245251 / 42017342
jainfowaysblr@gmail.com | Www.storazebiz.com

भारत को 'भारत' ही बोलें
आइये हम सब मिलकर शुरूआत करें
जय भारत से...

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

ऋतंभरा प्रज्ञा के धनी आचार्य महाप्रज्ञ- साध्वी अणिमाश्री

अन्तदृष्टि से सम्पन्न ऋतंभरा प्रज्ञा के धनी आचार्य महाप्रज्ञ इस शताब्दि के एक ऐसे महान अध्यात्मवादी दार्शनिक थे, जिन्होंने अपनी अन्तप्रज्ञा से विश्व क्षितिज में अनेक नए स्वस्तिक उकेरे हैं, केवल आध्यात्मिक क्षेत्र में ही नहीं, बल्कि सम्पूर्ण मानव जाति के अभ्युदय एवं उत्थान हेतु अनेक अवदान दिये हैं। आचार्य महाप्रज्ञ जी के कालजयी विचार श्रृंखला ने जीव जगत की एक अभिनव सुव्यवस्थित परिष्कृत एवं पारदर्शी जीवन जीने की एक अभिनव शैली दी है।

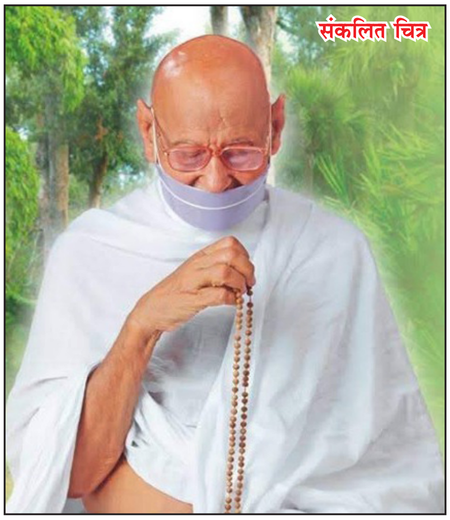

फोरी वैज्ञानिक उधति विश्व के लिए सिरदर्द बनती जा रही हैं एवं फोरा आध्यात्म विकास शुष्क सा दृष्टिगोचर हो रहा है। अध्यात्म और विज्ञान के समन्वय को स्वामी विवेकानन्द ने तीव्रता से महसूस किया था। विनोबा भावे ने भी इसके समन्वय पर बल दिया। आचार्य महाप्रज्ञ ने अपनी हंस मनीषा के बल पर इस दुरूह कार्य को संभव करके दिखा दिया। सरस्वती के इस वरदपुत्र ने अपने साहित्य में अध्यात्म और विज्ञान को एक साथ प्रतिपादन ही नहीं किया, बल्कि उन्हें एक दुसरे के समक्ष पूरक रूप में व्याख्यायित एवं प्रतिष्ठित किया। 'प्रेक्षा प्रणेता' आचार्य महाप्रज्ञ के मत के अनुसार;

विज्ञान ने धर्म की आस्था को विखंडित ही नहीं किया, बल्कि उसे प्राणवान भी किया है। धार्मिक क्षेत्र में यह एक सर्वधा नवीन विचार था, उनकी इस प्रस्थापना ने अध्यात्म जगत् को नये आयाम दिये हैं और अनेक अनुद्घाटित दिशाएं उद्घाटित हुई हैं।

केवल विचार ही नहीं व्यवहारिक धरातल पर उन्होंने प्रयोग भी दिये हैं। प्रेक्षा-ध्यान आचार्य महाप्रज्ञ का एक ऐसा अवदान हैं जिसे अध्यात्म और विज्ञान के समन्वय का कीर्ति स्तम्भ कहा जा सकता है।

अनेक व्यक्तियों ने इस प्रयोग को अपनाकर आत्मानंद का अनुभव किया है तथा मानसिक तनाव से छुटकारा पाया है। प्रेक्षा ध्यान के प्रयोग से अध्यात्म का नव जीवन शुरू हुआ है, जन सयुदाय को एक नई दृष्टि मिली है।

वर्षो तक ध्यान के प्रयोग स्वयं पर किये, महीनों-महीनों तक एकान्तवास किया। ध्यान योग की प्रलभ साधना के बाद मानवजाति ने यह नवनीत आपश्री से प्राप्त किया है।

शिक्षा का मूलभूत उद्देश्य है- सर्वांगीण व्यक्तित्व का निर्माण, इस उद्देश्य की पूर्ति की दृष्टि से शिक्षा पद्धति जो अधूरी रही है, यद्यपि हमारी शिक्षा पद्धति ने ऐसे अनेक कुशल डॉक्टर, इन्जीनियर, वकील, न्यायाधीश, अफसर एवं प्रकाशक आदि दिये हैं जिन्होंने अपने प्रतिभा बल से पूरे विश्व में भारत का गौरव बढाया है। शारीरिक एवं बौद्धिक विकास का पर्याप्त अवकाश हमारी वर्तमान शिक्षा पद्धति में है किन्तु मानसिक एवं भावनात्मक विकास के सर्वांगीण विकास हेतु जीवन-विज्ञान के रूप में शिक्षा का एक नया आयाम दिया, आज यह एक विज्ञान तथ्य बन गया है कि व्यक्ति के भाव एवं व्यवहार के लिए आंतरिक रसायन जिम्मेदार है। जीवन विज्ञान के प्रयोगों के द्वारा अन्त:स्त्रावी ग्रन्थि तंत्र के रूप में रसायनों को संतुलित एवं संवर्धित किया जा सकता है, उन प्रयोगों से अनेक भावनात्मक समस्याओं को सीधा समाधान मिलता है। नियमित एवं दीर्घकालिक अभ्यास से स्वभाव आदि में भी विलक्षण परिवर्तन होता है। भारतीय संत परम्परा के गौरव पुरूष, जन कल्याण के लिए सर्वात्पना समर्पित व्यक्तित्व आचार्य महाप्रज्ञ समग्र मानव जाति के अभ्युदय के लिए सतत चिंतनशील रहे, अहिंसा एवं शांति स्थापना हेतु उनके सानिध्य में चार अन्तराष्ट्रीय कान्फ्रेंसेस हुई, जिसकी प्रतिक्रिया बहुत ही सुंदर एवं सार्थक रही। जैन योग के पुनरुद्धारक आचार्य महाप्रज्ञजी की जन्म-शताब्दी के इस मंगल अवसर पर गण प्रांगण में श्रद्धा का समुन्दर लहरा रहा है। आस्था के अनमोल मोतियों से विराट व्यक्तित्व की अभिवंदना की जा रही है। आपश्री का विराट व्यक्तित्व अमाप्य है, बस आप द्वारा प्रदत्त साधना के सूत्र जीवन को सार्थकता दे। आपकी प्रज्ञा से नि:सृत आगम-व्याख्या की सोजस्विनी का प्रवाह युग-युग तक इस वसुन्धरा पर प्रवाहित होती रहे, समूची मानव-जाति आपके अमर अवदानों से अभ्युदय के पथ का वरण करें।

रामेश वाणी

- ⇨ महावीर का मार्ग सहज योग का मार्ग हैं।
- ⇨ महापुरूषों की सेवा उनकी आज्ञा के पालन में है।
- ⇨ जीवन में विचार आचार शुद्धि हो।
- ⇨ सकारात्मक सोच से सफलता मिलती है।
- ⇨ शांति के तीन सूत्र-सह अस्तित्व सहिष्णुता समता है।
- ⇨ अशांति का मूल कारण इच्छा अपेक्षा और तृष्णा है।
- ⇨ घर परिवार समाज में शांति प्रेम आनंद से रहे।
- ⇨ यतना (विवेक) धर्म की जननी है।
- ⇨ हर कार्य उपयोग पूर्वक करें।
- ⇨ बुराईयों की जड़ व्यसन है।
- ⇨ नियम बंधन नहीं मुक्ति है।
- ⇨ आत्मा की आवाज है संयम।
- ⇨ पैसे को नहीं ईमान को महत्व दें।
- ⇨ तारीखें बदलती रहेंगी, अपने आपको बदलें।
- ⇨ बड़ा वह है जो खुद को बड़ा ना माने।

- महेश नाहटा, नगरी
९४०६४-०१३५१

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

युवा समाजसेवी, गौ सेवक कार्य सम्राट बैंगलुरू निवासी महेंद्र मुणोत के कार्यों की झलकियां

जैन संस्कृति आत्म विकास की संस्कृति
- महेंद्र मुणोत गौसेवी

तुमकुरु के सीताकल्लू गांव में श्री पद्मावती देवी मंदिर का वार्षिक महोत्सव भव्यता के साथ मनाया गया। बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने देवी माता के दर्शन कर आर्शीवाद प्राप्त किया, इस देव कार्य में जैन मुनि श्री देवेन्द्र भट्टारक स्वामीजी एवं कनकगिरि के श्री भुवनकीर्ति भट्टारक स्वामीजी उपस्थित थे। विशिष्ट अतिथि के रूप में विजयनगर मारुति मेडिकल्स, बेंगलुरु के गोसेवक महेंद्र मुणोत उपस्थित थे। मंच पर बोलते हुए उन्होंने कहा, 'जैन संस्कृति आत्म-विकास की संस्कृति है, हम भाग्यशाली हैं कि हमारा जन्म जैन परिवार में हुआ है।' इस अवसर पर जरूरतमंद बच्चों को शिक्षण सामग्री वितरित की गई। संस्था की ओर से श्री मुणोथ को सम्मानित किया गया।

एस. के. क्रिएशन द्वारा कन्नड़ साहित्य परिषद के सभागार में आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि युवा समाज सेवी महेन्द्र मुणोत एवं प्रशांत संवर्गी को सम्मानित करते हुए क्रिएशन के संतोष कश्यप एवं अतिथि।

अखिल कर्नाटक मक्कल कुट्टा चामराजपेट द्वारा मक्कल कुट्टा उद्यान में आयोजित ५६वें ग्रीष्मकालीन शिविर के समापन समारोह में शिविरार्थियों का उत्साहवर्धन करते हुए समारोह के उद्घाटनकर्ता पूर्व लोकायुक्त संतोष हेगड़े, मुख्य अतिथि युवा समाज सेवी महेन्द्र मुणोत, अन्य अतिथि एवं मक्कल कुट्टा के पदाधिकारीगण।

बीएमएस महिला महाविद्यालय में खेलकूद प्रतियोगिता झील २०२४ का आयोजन किया गया। राष्ट्रीय खिलाड़ी पावना, मुख्य अतिथि विद्यार्थी मित्र युवा समाज सेवी महेन्द्र मुणोत ने खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन करते हुए कार्यक्रम का शुभारंभ किया। प्रतियोगिता में २५ से भी ज्यादा टीम के खिलाड़ी हिस्सा लेने पहुंचे। श्री मुणोत ने अपने वक्तव्य में कहा, 'खेल को खेल की भावना से खेलें'। इस अवसर पर प्राचार्य वसुंधरा, अभिराम शर्मा, बी. पद्मा, रूपा डी., महालक्ष्मी एम. एवं अन्य अतिथि उपस्थित थे। महाविद्यालय प्रबंधन ने अतिथियों को सम्मानित किया। उक्त सभी जानकारी भूपेन्द्र एस. भानावत ने 'जिनागम' को भेजी है।

श्वेताम्बर जैन दिगम्बर
'अहिंसा' और 'जैन एकता' हेतु सदा समर्पित
'जिनागम' यूं ही होती रहे पुष्पित-पल्लवित

Sangrila™
Lingerie & Garments
EXCLUSIVE SHOWROOM FOR LADIES, GENTS & KIDS
Manali Bldg. No.1, Shop. No.4, Evershine Nagar, Malad (W), Mumbai-400 064.

Beautiful Lingerie Options, You are Bound to Love...
We Cordially Invite you to view our Collection
BEST LINGERIE BRANDS UNDER ONE ROOF
✓ LOUNGEWEAR ✓ TSHIRTS ✓ TRACKPANTS ✓ NIGHTY ✓ NIGHT DRESS
✓ SHORTS ✓ LINGERIE AND MANY MORE...
JOCKEY · JINAL Exclusive Night Wear · vimal · Sukanya · Lady Care · face off
SCAN · enamor · Lango · VILAN · Lovable sport
Sangrila
● Mamta Jain - 8767555876 ● Mani Jain - 6350293073

उपदेष्टा महावीर - आचार्य महाप्रज्ञ

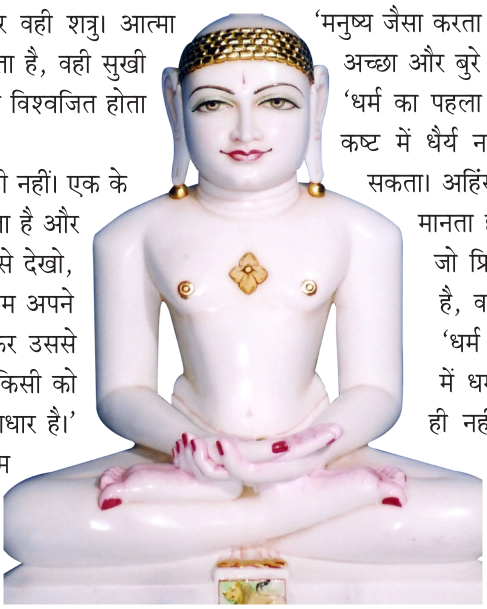

'सुख-दुःख का कर्ता आत्मा है, वही मित्र है और वही शत्रु। आत्मा पर अनुशासन रखें, जो आत्मा पर अनुशासन रखता है, वही सुखी रहता है। आत्मा से लड़ो, उस पर विजय पाने वाला विश्वजित होता है और वह सभी दुःखों से मुक्त हो जाता है।'

'किसी को शत्रु मत समझो। वास्तव में शत्रु कोई है ही नहीं। एक के प्रति तेरा विश्वास ही मित्र के रूप में प्रतिबिम्बित होता है और तेरा अविश्वास ही शत्रु के रूप में। सबको समदृष्टि से देखो, सर्वत्र मित्र ही मित्र दिखेंगे। दूसरे को शत्रु मानकर हम अपने आप पर अविश्वास करते हैं, किसी को शत्रु मानकर उससे मित्रता करने के बदले जो शत्रुता करता है, उससे किसी को शत्रु नहीं मानना ही श्रेष्ठ है। विश्व मैत्री का यही आधार है।'

'शान्ति के लिए बाहर मत देखो! हमारी आत्मा परम शान्ति का स्रोत है। उसकी खोज करो, आत्मा को जगाओ, शान्ति का स्रोत फूट पड़ेगा, भौतिक सामग्री सुख दे सकती है, चिर शान्ति नहीं। चिर शान्ति के लिए हम अन्दर झांकें। सन्तुलन का अभ्यास करें, हमारा कण-कण शान्तिमय हो जाएगा।'

बन्धु! हमारे में अनन्त शक्ति है, हम स्वयं अपने भाग्य विधाता हैं। श्रम में विश्वास करें। श्रम करें, फल अवश्य मिलेगा। पुरुषार्थी का अर्थ है, अपने कर्तव्य में विश्वास, इस विश्वास से हम जो चाहें वह बन सकते हैं।

'जितने व्यक्ति हैं, उतने ही विचार हैं। सभी अपने-अपने विचारों को महत्व देते हैं। विचार संस्कार-सापेक्ष होते हैं। सभी के विचार समान हो जाएं, यह कभी सम्भव नहीं पर यह अवश्य सम्भव है कि विचारों की विविधता में भी संघर्ष न हो। दूसरों पर अपने विचार थोपना हिंसा है, अपने विचार दूसरों को समझाओ, पर बलपूर्वक दूसरों पर उसको मत थोपो?'

'विचारों का आग्रह हिंसा है। सत्य का भी स्वीकार हो, आग्रह नहीं। आग्रह से सत्य भी तिरोहित हो जाता है। विचारों को लेकर खींचतान मत करो, दूसरा व्यक्ति हमारे विचार माने ही, यह आग्रह नहीं रखना चाहिये।'

'जो व्यक्ति दिन और रात, विजन और परिषद्, सुप्ति और जागरण में अपने आत्म-पतन के भय-हेतु पाप से बचते हैं, वे अध्यात्मवादी हैं। वे परम-आत्म के सान्निध्य में रहते हैं और एक दिन वे भी परम आत्मा बन जाते हैं।'

'दुःख के अग्र और मूल को उखाड़ फेंके, जो व्यक्ति दुःख का उपचार करते हैं, किन्तु उसके मूल का उपचार नहीं करते, वे दुःख से छुटकारा नहीं पा सकते।'

'जातिवाद अतात्त्विक है, इसमें वही फंसता है जो सच्चाई को नहीं पहचानता। काले-गोरे, पूर्वीय-पाश्चात्य, अच्छे-बुरे, स्त्री-पुरुष सभी में परम आत्मा विराजमान है। जाति का गर्व नहीं करें। दूसरों को अपने से ही मान कर अहंकार को बढ़ावा नहीं देने और दूसरों को अपने से हीन मान कर स्वयं दीन मत बनें। सर्वत्र समभाव रखें।'

'मनुष्य जैसा करता है, वैसा ही उसको भोगना पड़ता है, अच्छे का अच्छा और बुरे का बुरा।'

'धर्म का पहला लक्षण है अहिंसा और दूसरा है तितिक्षा, जो कष्ट में धैर्य नहीं रखता, वह अहिंसा की साधना नहीं कर सकता। अहिंसक अपने से शत्रुता रखने वालों को प्रिय मित्र मानता है, वह अप्रिय वचन को समभाव से सहता है, जो प्रिय और अप्रिय में सम रहता है, वह समदृष्टि है, वह अहिंसक है।'

'धर्म का आलय पवित्र जीवन है। अपवित्र आत्मा में धर्म नहीं ठहरता। धर्म परलोक सुधारने के लिए ही नहीं, उससे वर्तमान जीवन भी सुधरना चाहिए। जिसे धर्म- आराधना के द्वारा यहां शान्ति नहीं मिली, उसे आगे कैसे मिलेगी?'

'जीवन की भौतिक सुख-समृद्धि के लिए धर्म नहीं करें, पूजा-प्रतिष्ठा के लिए धर्म नहीं करें, केवल आत्मा की पवित्रता के लिए धर्म करना चाहिये यही श्रेष्ठ है।'

- विजयराज सुराणा, दिल्ली
९८६८८०७६८३

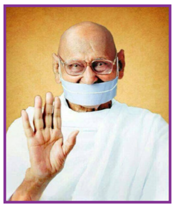
तेरापंथाचार्य महाप्रज्ञ जी के जन्म दिवस पर गुरुवर के चरणों में कोटि-कोटि वंदन
Vikas Banthia Gulab Banthia
Mob. 9849500685
MTV
MOHIT Toys Villa

#15-8-312, Sri K.C. Nivas, Near Mansingh Hotel, Feelkhana, Hyderabad, Telangana, Bharat - 500012 | Ph: 9640161718

With Best Compliments

GURU RAJENDRA METALLOYS INDIA PVT LTD

G R METALLOYS PVT LTD

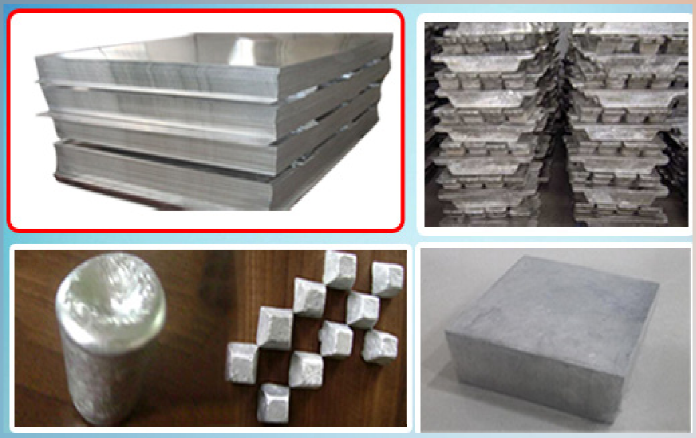

SHAH BABULAL DHANRAJJI JAIN

JAYANT BABULAL JAIN

SHAILESH BABULAL JAIN

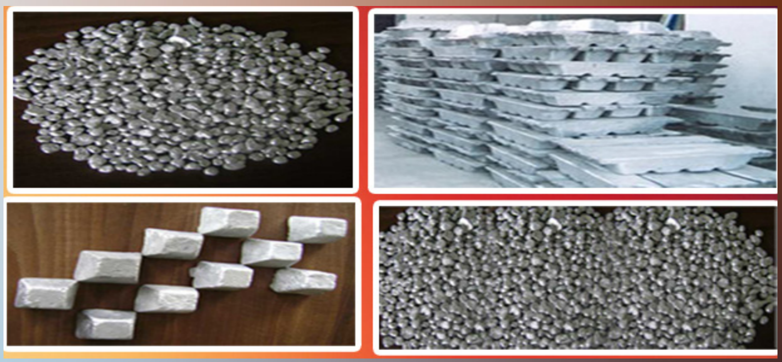

Manufactures of Aluminium Alloy Ingot, Aluminium Ingot, Aluminium Notch bar, Aluminium Shots, Aluminium Cubes

8, Gautam Vihar Society, Opp. Sukhsagar Complex, Aroma School Road, Ashram Road, Usmanpura, Ahmedabad, Gujarat , Bharat– 380 013.

साधु संत महात्मा मुनि सैया विवेक से समाज व राष्ट्र का प्रबोधन करें

साधु, संत, महात्मा, मुनी समाज और राष्ट्र के संस्कृति के केंद्र बिंदु होते हैं। भारतवर्ष में हजारों वर्ष पहले तीर्थंकर ऋषभदेव, तीर्थंकर पार्श्वनाथ, तीर्थंकर महावीर स्वामी से लेकर वर्तमान में चारित्र चक्रवर्ती आचार्य शांतिसागर जी महाराज, आचार्य समंतभद्र जी, आचार्य नेमीसागर जी, आचार्य देशभूषण जी, कुलभूषण जी, आचार्य ज्ञाननंदी जी, आचार्य चरित्र सागर जी, आचार्य विद्यानंद जी, आचार्य विद्यासागर जी, आचार्य प्रमाण सागर जी, आचार्य गुणधरनंदी जी, आचार्य तरुण सागर जी, आचार्य प्रसन्न सागर जी, महान त्यागी आचार्य सन्मति सागर जी, आचार्य विमल सागर जी, आचार्य कुंथु सागर जी, तीर्थ रक्षा शिरोमणि आचार्य गुरुवर आर्य नंदीजी, जंगल वाले मुनिश्री चिन्मयसागर जी, आचार्य वर्धमान सागर जी आचार्य पुलक सागर जी, सरस्वताचार्य मुनि देवनंदीजी, आचार्य गुप्तीनंदी जी आदि आदि महान मुनि संस्कृति संवर्धन का महान कार्य कर रहे हैं ऐसे महान मुनियों ने प्रवचन द्वारा, चारित्र द्वारा, प्रबोधन द्वारा, समाज और राष्ट्र को उन्नति प्रगति का मार्गदर्शन दिया है। मेरा सभी साधु संत मुनियों से अनुरोध है कि समाज और राष्ट्र को मार्गदर्शन अवश्य करें, किंतु अपने प्रबोधन में प्रवचन से समाज में बाधाएं निर्माण ना करें, समाज को सामाजिक राजनैतिक रोष का सामना न करना पड़े, मेरा सभी मुनियों से अनुरोध है कि यदि कोई राष्ट्रीय नेता राजनेता दर्शन को आएं, आशीष अवश्य दें, आर्शीवाद प्रदान करें, किंतु आवश्यक गुणगान ना करें। जैन मुनि त्यागी निर्विकल्प वितरागी होते हैं, किसी की अनावश्यक सराहना गुणगान से क्या मतलब?

दिल्ली के समारोह में एक दिगम्बर जैन मुनिश्री ने प्रधानमंत्री के उपस्थिति में इतनी तारीफ की प्रधानमंत्री जी को चारित्र चक्रवर्ती उपाधि प्रदान कर दी। चारित्र चक्रवर्ती का मतलब समझते हुए इस पर किसी ने आपत्ति नहीं उठाई, यह समाज के लिए अशोभनीय एवं आपत्तिजनक रहा, इस पर समाज को अड़चनों का, रोष का सामना करना पड़ सकता है। जैन मुनियों को राजनैतिक झंझटों से दूर रहना चाहिए, आशीष प्रदान जरूर करे, पर अनावश्यक प्रशंसा, स्तुति से दूर रहें। आप तो वितरागी की मूर्ति हैं, आप संसार से अलिप्त है।

मेरा अनुरोध है, जैन संत, महात्मा, त्यागी, मुनि, राजनैतिक बातों से अलिप्त रहें।

- एम.सी. जैन,
पत्रकार-साहित्यकार

सड़क दुर्घटना में जैन संत हुए कालधर्म अन्य मुनिवृन्द घायल, सहायक की भी मौत

मुंबई: आचार्य विजय केसरसूरीश्वर महाराज साहब के समुदाय के आचार्य विजय विज्ञानप्रभसूरीश्वर महाराज साहब और दो सहवर्ती संतों का कुर्नूल-हैदराबाद राजमार्ग पर कुर्नूल से करीब ६० किलोमीटर दूर ट्रक से एक्सीडेंट हो गया। घटना के बाद ड्राइवर ट्रक छोड़कर भाग गया। आचार्य भगवंत एवं एक मुनिवर को कुर्नूल की हॉस्पिटल भर्ती किया गया है। डॉक्टरों की पूरी टीम उपचार में लगी हुई है। कुर्नूलसंघ के अनेक ट्रस्टी व स्वयंसेवक मौजूद हैं। आचार्य भगवंत अभी आंखें नहीं खोल रहे हैं और बोल नहीं पा रहे है। सहवर्ती मुनिवर बेहोश हैं। दुर्घटना में पंन्यास प्रवर पुनितप्रभविजय महाराज साहब का स्वर्गवास हो गया है। सहवर्ती एक दीक्षार्थी के ट्रक के नीचे दब जाने से ट्रक हटाने के लिये क्रेन मंगवाई गई, एक सहायक बका नामक युवक का ट्रक के नीचे दबने से निधन हो गया। पंन्यास प्रवर पुनितप्रभविजय महाराज साहब का पार्थिव शरीर कुर्नूल ले जाया गया और अंतिम संस्कार किया गया।

भारत को 'भारत' ही बोला जाए

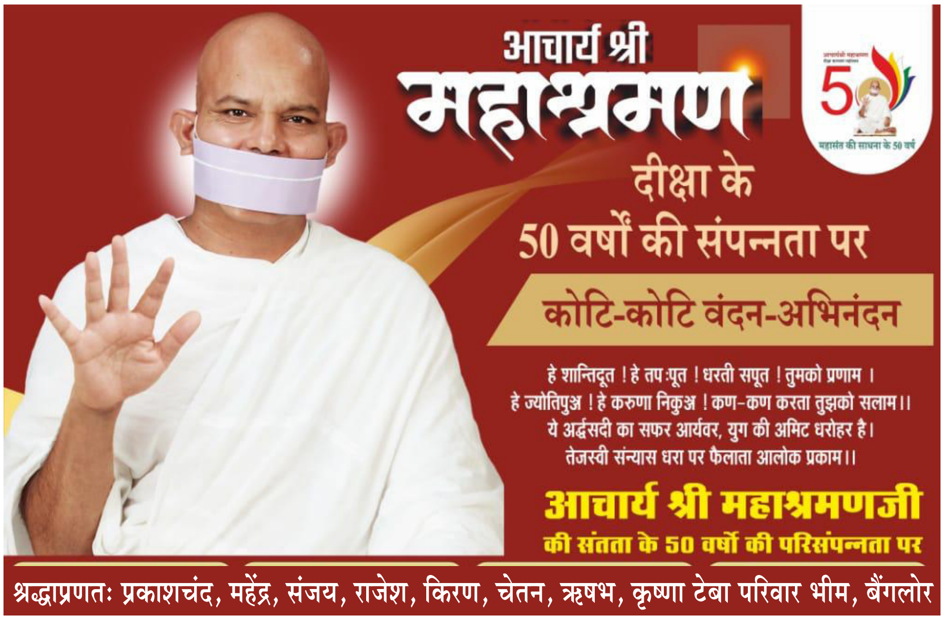

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

जय भारत! जय जिनेन्द्र!

भारत को 'भारत' ही बोलेगें INDIA नहीं

प्रदीप नाहटा

अध्यक्ष श्री पार्श्व पद्मावती जिनालय महाबलीपुरम तीर्थ
बीकानेर निवासी-दिल्ली प्रवासी
भ्रमणध्वनिः ९३१३५६१०००

प्रदीप जी 'जैन एकता' के संदर्भ में अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहते हैं कि आज हमारे समाज में 'जैन एकता' की बहुत ही जरूरत है, चाहे वह आर्थिक और सामाजिक हो या राजनीतिक, हर क्षेत्र में अपने वर्चश्व को स्थापित करने के लिए समाज में 'एकता' होना बहुत जरूरी है, इसके लिए सर्वप्रथम धार्मिक व सामाजिक संस्थानों में बड़े पदों पर आसीन पदाधिकारी को अपनी हठ धर्मिता छोड़नी होगी, जिन मुद्दों व विचारों पर हम एक हो सकते हैं उन पर सभी को एक हो जाना चाहिए, तभी हमारे समाज में 'एकता' स्थापित हो सकती है, अन्यथा यदि सभी अपने-अपने राग अलापेंगे तो 'एकता' असंभव है।

आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म और समाज से दूर जा रही है और इसका कारण समाज में फैली राजनीति, जिस कारण लोगों में आपसी सामंजस्य नहीं है और इसी को देखते हुए युवा पीढ़ी अपने धर्म और समाज से दूर हो रही है, क्योंकि वह किसी भी राजनीतिक पचड़े में नहीं पड़ना चाहती, इसी को देखते हुए युवा पीढ़ी अपने धर्म और समाज से दूर हो रही है, समाज के वरिष्ठ पदों पर बैठे पदाधिकारी द्वारा युवाओं को मौका नहीं दिया जाता, युवा अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन नहीं कर सकता, तो युवा वर्ग कैसे आगे आएंगे, युवाओं को आगे लाने के लिए सभी को मिलकर प्रयास करना होगा।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि बिल्कुल अपने देश का नाम सिर्फ और सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए, यही हमारे देश की वास्तविक पहचान है। तीर्थंकर आदिनाथ जी के ज्येष्ठ पुत्र 'भरत' के नाम से इस देश का नाम 'भारत' पड़ा, INDIA तो अंग्रेजों की देन है, विश्व में किसी भी देश के दो नाम नहीं हैं, तो हम अपने देश को कई नाम से क्यों बुलायें, हमारा भी एक ही नाम, एक ही पहचान रहनी चाहिए 'भारत'।

प्रदीप जी मूलतः राजस्थान स्थित 'बीकानेर' के निवासी हैं। आपका जन्म व सम्पूर्ण शिक्षा 'बीकानेर' में संपन्न हुयी है, १९७२ से आप दिल्ली में बसे हैं और रियल इस्टेट के व्यापार से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्य में भी सक्रिय रहते हैं, जैन हेरीटेज फाउंडेशन के उपाध्यक्ष हैं, श्री पार्श्व पद्मावती जिनालय महाबलीपुरम तीर्थ में अध्यक्ष के पद पर सक्रिय हैं, साथ ही अन्य कई सामाजिक संस्थाओं से भी जुड़े हुए हैं। जय भारत!

सुरेश जैन

अध्यक्ष श्री सम्मेद शिखर जी तीर्थ यात्रा संघ
मुजफ्फरनगर निवासी-दिल्ली प्रवासी
भ्रमणध्वनिः ९३१२२३१२६६

सुरेश जी 'जैन एकता' के संदर्भ में अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहते कि आज हमारे समाज में 'जैन एकता' की बहुत जरूरत है। आज हमारा समाज पंथों में बंटता चला जा रहा है, जिस कारण हम अपने मंदिरों और तीर्थ क्षेत्र की रक्षा नहीं कर पा रहे, हमारे आपसी मतभेदों का लाभ अन्य धर्म और समाज उठा रहे हैं और हमारे तीर्थ क्षेत्र पर कब्जा करते जा रहे हैं, हमें एक होना ही होगा, जैन धर्म से हम हैं, हमसे जैन धर्म नहीं। अपने धर्म और समाज के अस्तित्व को बनाने के लिए समाज में एकता लाना बहुत जरूरी है और इसके लिए सभी को मिलकर प्रयास करना होगा तभी 'जैन एकता' स्थापित हो सकती है।

आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म और समाज से दूर होती जा रही है, वह अपनी जीवन शैली में इतना व्यस्त है कि उनके पास धर्म और समाज के लिए समय ही नहीं है।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि बिल्कुल अपने देश का एक ही नाम रहना चाहिए 'भारत'।

सुरेश जी मूलतः उत्तर प्रदेश स्थित 'मुज़फ़्फ़र नगर' के निवासी हैं। आपका जन्म व प्रारंभिक शिक्षा यहीं संपन्न हुई है। उच्च शिक्षा दिल्ली से ग्रहण की, वर्तमान में दिल्ली में बसे हुए हैं और ट्रेवल्स, रेडीमेड कपड़ों के व्यवसाय के साथ आपका स्वयं का पानी के डिस्ट्रिब्युशन भी है। आप धार्मिक कार्यों व अनुष्ठान के लिए बिना किसी लाभ के पानी की सेवाएं मुफ्त प्रदान करते हैं, वर्तमान में आप श्री सम्मेद शिखर जी तीर्थ यात्रा संघ के अध्यक्ष पद पर सक्रिय हैं अन्य कई संस्थाओं में कार्यकारिणी सदस्य हैं। जय भारत!

महेंद्र टेबा

अध्यक्ष राजस्थानी मित्र मंडल बेंगलुरु
भीम निवासी-बेंगलुरु प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९४४८८५२४८८

महेंद्र जी आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के प्रति अपने भावों को व्यक्त करते हुए कहते हैं कि आचार्य श्री की जन्मस्थली 'टमकोर' है हमारे तेरापंथ धर्मसंघ के दशम आचार्य प्रेक्षा प्रणेता आचार्यश्री महाप्रज्ञाजी का योगदान अतुलनीय है, उन्होंने अपने जीवन काल में ही 'प्रेक्षा ध्यान', जीवन विज्ञान और मानवता के बारे में विस्तृत जानकारी दी। मनुष्य बाहरी रूप से भले ही कितना ही सुखी हो जाए पर जब तक मन दुखी है तो वह दुखी ही रहता है, अंदरूनी शांति नहीं प्राप्त हो सकती, इस दुख को दूर करने के लिए 'प्रेक्षा ध्यान' बहुत ही उत्तम मार्ग है। 'जीवन विज्ञान' के माध्यम से आचार्य श्री ने हमें सिखाया जीवन कैसे जिया जाता है, बच्चों में भी इसकी परिभाषा को परिभाषित करने के लिए 'जीवन विज्ञान' को पाठ्य पुस्तक अभ्यासक्रम में लाया गया, विज्ञान और जीवन दोनों को ही कैसे साथ में लेकर चल सकते हैं, इसका मार्ग दिखलाया था आचार्य श्री ने। जीवन विज्ञान के माध्यम से बच्चों की याददाश्त शक्ति बढ़ रही है। महाप्राण ध्वनि हमारे भीतर के तरंगों को प्रस्फुटित करते हैं जिसे मानव के विचारों में परिवर्तन आता है, वह सकारात्मकता की ओर बढ़ने लगता है, यह सब आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी की ही देन है, उनके चरणों में मेरा कोटि-कोटि वंदन।

'जैन एकता' के संदर्भ में आपका कहना है कि 'जैन एकता' की हमारे समाज को सदियों से जरूरत रही है, भले ही हम पंथवाद से जुड़े हैं, पंथ अपनी जगह, धर्म अपनी जगह पर है, मूल तत्व यह है कि हम सभी जैन हैं, यदि हम संगठित होकर कार्य करें तो विश्व में हमारा समाज बहुत ऊंचा रहेगा इसीलिए समाज में एकता होना बहुत जरूरी है।

समाज में युवा पीढ़ी की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका होती है, युवाओं के बगैर किसी भी योजना को सफलता नहीं दी जा सकती, युवाओं को जोड़े रखना हर व्यक्ति का दायित्व बनता है, शिशु अवस्था से ही युवाओं को आध्यात्मिक विचारों से ओतप्रोत करना चाहिए, तभी वह बाहरी दुनिया में जाकर आध्यात्मिक बनता है, और उन्हें एनर्जी प्राप्त होती रहती है, इसलिए युवाओं को अपने परिवार और माता-पिता से बचपन से ही ऐसे संस्कार मिलने चाहिए, जिसे वह युवावस्था में भी संजोकर रखें।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम 'भारत' ही रहना चाहिए 'भारत' हमारी आत्मा से जुड़ा है 'भारत' नाम लेने से हमारी विचारधारा बदल जाती है, अतः हमारे देश की पहचान 'भारत' थी 'भारत' है और केवल 'भारत' ही रहनी चाहिए।

महेंद्र जी मूलतः राजस्थान स्थित 'भीम' के निवासी हैं। आपका जन्म सम्पूर्ण शिक्षा राजस्थान में ही संपन्न हुई है, पिछले कई वर्षो से आप बेंगलुरु में बसे हुए हैं, और आभूषणों के कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्य में भी सक्रिय रहते हैं। तेरापंथ सभा युवक परिषद से लगातार २५ सालों से जुड़े हुए हैं, तेरापंथ सभा विजयनगर के उपाध्यक्ष रहे हैं, वर्तमान में राजस्थानी मित्र मंडल के अध्यक्ष हैं, अन्य कई संस्थानों से भी जुड़े हैं। जय भारत!

विमल भंसाली

निवर्तमान अध्यक्ष दिल्ली मानसरोवर तेरापंथ सभा
सुजानगढ़ निवासी-दिल्ली प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९३१२२४३८११

विमल जी आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के प्रति अपने भावों को व्यक्त करते हुए कहते हैं कि आचार्य श्री द्वारा बताया गया आध्यात्म चिंतन और आध्यात्मिक सोच ने हमें बहुत प्रभावित किया, उनके द्वारा दिया गया 'प्रेक्षा ध्यान' जैन समाज के लिए बहुत बड़ी देन है इसके माध्यम से कई लोगों ने अपने जीवन में सफलता प्राप्त की है आचार्य श्री एक महान संत होने के साथ धार्मिक आध्यात्मिक और शैक्षणिक क्षेत्र में भी कई आयाम दिए हैं, आचार्य श्री की आभामंडल बहुत ही प्रभावशाली थी, जिसे देख मन प्रसन्नचित हो जाता था, ऐसे गुरुवर के चरणों में कोटि-कोटि वंदन।

'एकता' के संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने समाज में 'एकता' होनी चाहिए, पर यह असंभव है, क्योंकि समाज में आज जो चलन चल रहा है, अपनी अपनी डफली अपना अपना राग। आज समाज का हर पंथ अपने को ही श्रेष्ठ मानने में लगा हुआ है, तो एकता कैसे स्थापित हो सकती है?

आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म और सामाज से दूर होती जा रही है, वह आध्यात्मिकता को छोड़ भौतिकवाद के पीछे पड़ी हुई है।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम सिर्फ और सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए।

विमल जी मूलतः राजस्थान के चुरू जिले में स्थित 'सुजानगढ़' के निवासी हैं, आपका जन्म सम्पूर्ण शिक्षा यहीं संपन्न हुई है, १९८४ से आप दिल्ली में बसे हुए हैं और मार्बल पॉलिशिंग के कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यो में भी सक्रिय रहते हैं। पूर्व में २०२२-२४ के आप मानसरोवर दिल्ली क्षेत्र के अध्यक्ष रहे, अन्य कई सामाजिक संस्थाओं से जुड़े हुए हैं। जय भारत!

जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

नानालाल कोठारी

अध्यक्ष स्थानकवासी समाज ईटा अपार्टमेंट बेंगलुरु
आमेट निवासी-बेंगलुरु प्रवासी
भ्रमणध्वनिः ८९५१६३७९२४

नानालाल जी 'जैन एकता' के संदर्भ में अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहते हैं कि 'जैन एकता' के लिए सभी को मिलकर प्रयास करना होगा, तभी 'जैन एकता' स्थापित हो सकती है, सभी पंथों को एक साथ मिलकर कार्य करना होगा जो भी कार्यक्रम होते हैं जिससे समाज एकता की ओर बढ़ सकेगा, हमें संगठन मजबूत करना होगा और यह कार्य 'जैन एकता' के माध्यम से ही संभव है, एकता ना होने से आज हमारा समाज पूरी तरह से बिखरा हुआ है, अन्य धर्म समाज के सम्मुख हमारा कोई अस्तित्व ही नहीं रहा, अपने धर्म व समाज के अस्तित्व को बनाए रखने के लिए 'एकता' होना बहुत जरूरी है।

आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म और समाज से कम जुड़ी हुई है, उन्हें संघ और समाज से जोड़ने का प्रयास किया जाना चाहिए, समाज द्वारा आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों में उनकी उपस्थिति अवश्य होनी चाहिए, तभी युवाओं का लगाव अपने धर्म और समाज के प्रति बढ़ेगा।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का एक ही नाम, एक ही पहचान रहनी चाहिए 'भारत'।

नानालाल जी राजस्थान के राजसमंद जिले में स्थित 'आमेट' के निवासी हैं। आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा यहीं संपन्न हुई है, पिछले १५ वर्षों से आप 'बेंगलुरु' में बसे हैं और कंप्यूटर व्यवसाय में संलग्न हैं, जो वर्तमान में आपके पुत्र संभाल रहे हैं। आप स्थानकवासी समाज ईटा अपार्टमेंट बेंगलुरु के अध्यक्ष हैं, मेवाड़ जैन संघ से भी जुड़े हुए हैं, अन्य स्थानीय सामाजिक संस्थाओं में भी यथासंभव सक्रिय रहते हैं। जय भारत!

मनसुख दुग्गड़

व्यवसायी व समाजसेवी
गंगाशहर निवासी-दिल्ली प्रवासी
भ्रमणध्वनिः ९८१०१३६७३१

मनसुख जी आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के प्रति अपने भावों को व्यक्त करते हुए कहते हैं कि आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी एक आध्यात्मिक गुरु थे, उन्होंने आध्यात्मिकता के साथ-साथ 'प्रेक्षा ध्यान' को विशेष महत्व दिया, उनके द्वारा दिया गया 'प्रेक्षा ध्यान' संपूर्ण समाज के लिए एक अनुपम देन है। 'प्रेक्षा ध्यान' के माध्यम से व्यक्ति शारीरिक व मानसिक रूप से सक्षम बन सकता है, आज समाज इसे किसी न किसी रूप में अपना रहा है, लोगों के जीवन में सुधार हो रहे है। आचार्य श्री के दर्शन करने मात्र से मन निर्मल हो जाता था, किसी प्रकार की कोई शंका नहीं रहती थी, उनके चरणों में मेरा कोटि-कोटि वंदन...

'जैन एकता' के संदर्भ में आपका कहना है कि 'एकता' जरूरी है पर आज हमारा समाज बिखरा हुआ है, सबकी विचारधाराएं अलग-अलग हैं तो 'एकता' कैसे स्थापित हो सकती है? 'एकता' स्थापित करने के लिए सर्वप्रथम हमारे गुरु भगवंतों को आगे आना होगा और इसके लिए कार्य करना होगा, तभी 'जैन एकता' स्थापित हो सकती है।

आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म समाज से पहले की अपेक्षा काफी हद तक जुड़ रही है, बस उन्हें उचित मार्गदर्शन देना होगा।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम केवल 'भारत' ही रहना चाहिए इस अभियान का मैं समर्थन करता हूं।

मनसुख जी मूलतः राजस्थान के बीकानेर जिले में स्थित 'गंगाशहर' के निवासी हैं। आपका जन्म व सम्पूर्ण शिक्षा यहीं संपन्न हुई है, पिछले ३५ सालों से आप दिल्ली में बसे हुए हैं और स्वयं का अकाउंटिंग फॅर्म संचालित कर रहे हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं, तेरापंथ सभा दिल्ली के सदस्य हैं। जय भारत!

अनिल कुंडलिया

पूर्व मंत्री तेरापंथ सभा दिल्ली
चूरू निवासी-दिल्ली प्रवासी
भ्रमणध्वनिः ९८१०३८९५०१

अनिल जी आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के प्रति अपने भावों को व्यक्त करते हुए कहते हैं कि आचार्य श्री एक अद्भुत व्यक्तित्व के धनी थे, उनके चेहरे पर हमेशा सौम्यता झलकती थी, उनका सादा जीवन हर किसी को प्रेरित करता था, उनके दर्शन लाभ से एक अद्भुत शांति की प्राप्ति होती थी, उन्होंने समाज और व्यक्तित्व के उत्थान के लिए कई आयाम दिए, जिनमें से एक है 'प्रेक्षा ध्यान', जिसके माध्यम से कई व्यक्तियों ने स्वास्थ्य लाभ प्राप्त किया है, 'प्रेक्षा ध्यान' के प्रति लोगों में काफी जागरुकता बढ़ी, उनकी लेखनी ने हमेशा ही लोगों को शिक्षा प्रदान की, ऐसे गुरुवर के चरणों में मेरा कोटि-कोटि वंदन।

शेष पृष्ठ ३१ पर...

पृष्ठ ३० से... 'जैन एकता' के संदर्भ में आपका कहना है 'एकता' तो होनी ही चाहिए, इसके लिए सर्वप्रथम सभी पंथों को एक मंच पर स्थापित होना होगा, तभी 'जैन एकता' स्थापित हो सकती है। 'एकता' में बहुत ताकत होती है, जो हर संभव कार्य को दूर कर सकती है, इसीलिए हमारे जैन समाज में एकता होना बहुत जरूरी है, तभी हम अपने वजूद के लिए लड़ सकेंगे, अपना वर्चस्व स्थापित कर सकेंगे।

आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म और समाज से दूर हो रही है और इसका कारण समाज में फैली राजनीति, जो युवाओं को मौका ही नहीं देती आगे आने के लिए, तो युवा वर्ग कैसे जुड़ेंगे, हमें युवाओं के लिए कुछ करना होगा तभी हमारे बाद युवा पीढ़ी अपने धर्म और समाज से जुड़ी रहेगी

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का एक ही नाम, एक ही पहचान रहनी चाहिए 'भारत'।

अनिल जी मूलतः राजस्थान के 'चुरू' जिले में स्थित 'राजलदेसर' के निवासी हैं, आपका जन्म राजस्थान और संपूर्ण शिक्षा 'कोलकाता' में संपन्न हुई है, पिछले २५ सालों से आप 'दिल्ली' में बसे हुए हैं और पूर्व में तेरापंथ सभा के मंत्री रहे, वर्तमान में कार्यकारिणी सदस्य हैं। ओसवाल समाज से भी जुड़े हुए हैं। जय भारत!

भगवान पर भरोसा रखें

एक राजा था, उसके कोई पुत्र नहीं था। राजा बहुत दिनों से पुत्र की प्राप्ति के लिए आशा लगाए बैठा था, लेकिन पुत्र की प्राप्ति नहीं हुई, उसके सलाहकारों ने तांत्रिकों से सहयोग लेने को कहा। तांत्रिकों की तरफ से राजा को सुझाव मिला कि यदि किसी बच्चे की बलि दे दी जाए तो राजा को पुत्र की प्राप्ति हो सकती है।

राजा ने राज्य में ढिंढोरा पिटवाया कि जो अपना बच्चा बलि चढाने के लिये राजा को देगा, उसे राजा की तरफ से बहुत सारा धन दिया जाएगा।

एक परिवार में कई बच्चे थे, गरीबी भी बहुत थी। एक ऐसा बच्चा भी था जो ईश्वर पर आस्था रखता था तथा सन्तों के सत्संग में अधिक समय देता था। राजा की मुनादी सुनकर परिवार को लगा कि क्यों ना इसे राजा को दे दिया जाए, क्योंकि ये निकम्मा है, कुछ काम -धाम भी नहीं करता, और हमारे किसी काम का भी नहीं, इसे देने पर राजा प्रसन्न होकर हमें बहुत सारा धन देगा।

ऐसा ही किया गया, बच्चा राजा को दे दिया गया।

राजा ने बच्चे के बदले उसके परिवार को काफी धन दिया। राजा के तांत्रिकों द्वारा बच्चे की बलि देने की तैयारी हो गई।

राजा को भी बुला लिया गया, बच्चे से पूछा गया कि तुम्हारी आखिरी इच्छा क्या है, यह बात राजा ने बच्चे से पूछी और तांत्रिकों ने भी पूछी।

बच्चे ने कहा कि मेरे लिए रेत मँगा दी जाए, राजा ने कहा कि बच्चे की इच्छा पूरी की जाये, अतः रेत मंगायी गयी।

बच्चे ने रेत से चार ढेर बनाए, एक-एक करके बच्चे ने तीन रेत के ढेरों को तोड़ दिया और चौथे के सामने हाथ जोड़कर बैठ गया और उसने राजा से कहा कि अब जो करना है आप लोग कर लें।

यह सब देखकर तांत्रिक डर गए और उन्होंने बच्चे से पूछा, पहले तुम यह बताओ कि ये तुमने क्या किया है?

राजा ने भी यही सवाल बच्चे से पूछा तो बच्चे ने कहा कि पहली ढेरी मेरे माता-पिता की थी। मेरी रक्षा करना उनका कर्त्तव्य था, परंतु उन्होंने अपने कर्त्तव्य का पालन न करके पैसे के लिए मुझे बेच दिया, इसलिए मैंने ये ढेरी तोड़ी दी।

दूसरी ढेरी मेरे सगे-सम्बन्धियों की थी, परंतु उन्होंने भी मेरे माता-पिता को नहीं समझाया, अतः मैंने दूसरी ढेरी को भी तोड़ दिया।

और तीसरी ढेरी - हे राजन आपकी थी क्योंकि राज्य की प्रजा की रक्षा करना राजा का ही धर्म होता है, परन्तु जब राजा ही मेरी बलि देना चाह रहा है तो ये ढेरी भी मैंने तोड़ दी।

और चौथी ढेरी, हे राजन, मेरे ईश्वर की है, अब सिर्फ और सिर्फ, अपने ईश्वर पर ही मुझे भरोसा है, इसलिए यह एक ढेरी मैंने छोड़ दी है।

बच्चे का उत्तर सुनकर, राजा अंदर तक हिल गया, उसने सोचा कि पता नहीं बच्चे की बलि देने के पश्चात भी पुत्र की प्राप्ति होगी भी या नहीं होगी, इसलिये क्यों न इस बच्चे को ही अपना पुत्र बना लिया जाये? इतना समझदार और ईश्वर-भक्त बच्चा है, इससे अच्छा बच्चा और कहाँ मिलेगा? काफी सोच विचार के बाद राजा ने उस बच्चे को अपना पुत्र बना लिया और राजकुमार घोषित कर दिया।

जो व्यक्ति ईश्वर पर विश्वास रखते हैं, उनका कोई बाल भी बाँका नहीं कर सकता, यह एक अटल सत्य है।

जो मनुष्य हर मुश्किल में केवल और केवल ईश्वर का ही आसरा रखते हैं, उनका कहीं से भी किसी भी प्रकार का कोई अहित नहीं हो सकता। संसार में सभी रिश्ते झूठे हैं, केवल और केवल एक प्रभु का नाम ही सत्य है, इसलिए आप हमेशा जरूरतमंदों की सहायता करते रहो, जिससे प्रभु जी भी आपका ख्याल रखे, सभी मनोकामनाएं पूर्ण करें।

!! ॐ अर्हम् !!
जय तुलसी जय महाश्रमण जय महाप्रज्ञ

आचार्य श्री तुलसी
महाप्रयाण दिवस २४ जून
वर्तमानाचार्य श्री महाश्रमण
आचार्य श्री महाप्रज्ञ
जन्म दिवस ०३ जुलाई
Birendra Sancheti
Mob: 9431260358
Balaji Trading Company
M.G.Road, Katihar, Bihar - 854105 Bharat

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

विश्वसनीय निदान की सरलतम पद्धति एक्युप्रेशर

शरीर के सूक्ष्म से सूक्ष्म भाग का संबंध पूरे शरीर के हर एक अंगों से होता है, इसी कारण जब शरीर के किसी भाग में तीव्र पीड़ा होती है अथवा कष्ट होता है तो, हमें कुछ भी अच्छा नहीं लगता। शरीर में प्रत्येक अंग, उपांग, अवयव, अन्तःश्रावी ग्रन्थियों आदि से संबंधित कुछ महत्त्वपूर्ण प्रतिवेदन बिन्दु हमारी हथेली और पगथली में होते हैं, जिस प्रकार किसी भवन की बिजली का सारा नियन्त्रण मुख्य स्विच बोर्ड से होता है, ठीक उसी प्रकार ये प्रतिवेदन बिन्दु शरीर के किसी न किसी भाग का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिस प्रकार कोई व्यक्ति किसी का पिता, किसी का भाई, किसी का पति तो अन्य किसी का दादा, नाना, पुत्र, चाचा, मामा, मित्र आदि भी हो सकता है। यदि किसी व्यक्ति का फोटो अलग-अलग स्थानों से लिया जाये तो एक ही व्यक्ति के फोटो में अन्तर हो सकता है, ठीक उसी प्रकार से ये प्रतिवेदन बिन्दु भी शरीर के अलग-अलग भागों से संबंधित हो सकते हैं, यानी एक ही प्रतिवेदन बिन्दु के शरीर में अनेक संबंध हो सकते हैं।

सुजोक और रिफ्लेक्सोलॉजी एक्युप्रेशर के सिद्धान्तानुसार हथेली और पगथली में दबाव देने पर जिन स्थानों पर दर्द होता है, उसका मतलब उन स्थानों पर विकार अथवा अनावश्यक विजातीय तत्त्वों का जमाव हो जाना होता है। परिणाम स्वरूप शरीर में प्राण ऊर्जा के प्रवाह में अवरोध हो जाता है, ये प्रतिवेदन बिन्दु बिजली के पंखों, बल्ब या अन्य उपकरणों के स्विच की भांति शरीर के अलग-अलग भागों से संबंधित होते हैं, जिस प्रकार स्विच में खराबी होने से उपकरण तक बिजली का प्रवाह सही ढंग से नहीं पहुँचता, ठीक उसी प्रकार इन प्रतिवेदन बिन्दुओं पर विजातीय तत्त्वों के जमा होने से संबंधित अंग, उपांग, अवयवों आदि में प्राण ऊर्जा के प्रवाह में अवरोध हो जाने से व्यक्ति रोगी बनने लगता है।

एक्युप्रेशर द्वारा रोग निदान का सिद्धान्त- हथेली और पगथली में आगे पीछे सूक्ष्म से सूक्ष्म भाग में अर्थात पूरी हथेली और पगथली के पूरे क्षेत्रफल में अंगुलियों या अंगूठे से हम सहनीय गहरा दबाव देवें और जहाँ-जहाँ जैसा-जैसा दर्द आता है, वे सारे दर्द वाले प्रतिवेदन बिन्दु एक्युप्रेशर के सिद्धान्तानुसार रोग से संबंधित होते हैं अर्थात् वे शरीर में रोग के परिवार के सदस्य होते हैं।

एक्युप्रेशर द्वारा निदान क्यों विश्वसनीय?

१. प्रत्येक व्यक्ति की हथेली और पगथली उसके स्वयं की होती है, अतः इस विधि द्वारा उस व्यक्ति का स्वयं से संबंधित शरीर के सभी रोगों का निदान होता है, जबकि लक्षणों पर आधारित निदान पूर्ण शरीर का नहीं हो सकता, किसी भी दो हृदय रोगियों, मधुमेह के रोगियों अथवा और किसी नाम से पुकारे जाने वाले रोगियों के रोग का परिवार कभी भी पूर्ण रूप से एक सा नहीं हो सकता, अतः लक्षणों एवं यंत्रों पर आधारित रोग का निदान करते समय सहयोगी रोगों की उपेक्षा होना स्वाभाविक है, परन्तु एक्युप्रेशर पद्धति द्वारा जितना सही और विश्वसनीय निदान होता है, अन्यत्र प्रायः संभव नहीं होता।

२. कभी-कभी रोग के कारण कुछ और होते हैं और उसके लक्षण कहीं दूसरे अंगों पर प्रकट होते हैं, जैसे मधुमेह का कारण पाचन तंत्र का बिगड़ना भी हो सकता है न कि पेन्क्रियाज का खराब होना। हृदय शूल का कारण छोटी आंत में बनी गैस का प्रभाव भी हो सकता है, न कि हृदय की कमजोरी का होना। अस्थमा का कारण बड़ी आंत का बराबर कार्य न करना, न कि फेफड़ों का खराब होना, जब निदान ही अधूरा होता है तो उपचार कैसे स्थायी एवं प्रभावशाली हो सकता है? आधुनिक चिकित्सक ऐसे रोगों को प्रायः असाध्य बतला देते हैं, परन्तु हथेली और पगथली के समस्त प्रतिवेदन बिन्दुओं पर दबाव देने से जहाँ ज्यादा दर्द आता है, वे ही रोग का मुख्य कारण होते हैं, भले ही रोग के लक्षण कहीं अन्य भाग में प्रकट क्यों न हों इसी कारण एक्युप्रेशर असाध्य रोगों के निदान की प्रभावशाली चिकित्सा पद्धति होती है।

३. रोग की प्रारम्भिक अवस्था में ही इस विधि द्वारा निदान संभव होता है, जहाँ-जहाँ पर दबाव देने से दर्द आता है, वे सभी प्रतिवेदन बिन्दु भविष्य में शरीर में रोग की स्थिति बनाते हैं, यदि रोग हो गया हो तो वे उसके कारण होते हैं, परन्तु यदि रोग के लक्षण प्रत्यक्ष बाह्य रूप से प्रकट न हुए हों तो भविष्य में होने वाले रोगों का कारण उन्हीं प्रतिवेदन बिन्दुओं में से होता है, रोग आने से पूर्व उसकी प्रारम्भिक अवस्था का निदान जितना सरल इस पद्धति द्वारा होता है, उतना प्रायः अन्यत्र कठिन होता है।

४. शरीर में रोग कभी अकेला आ ही नहीं सकता, जिन लक्षणों के आधार पर आज रोगों का नामकरण किया जाता है, वे वास्तव में रोगों के नेता होते हैं, जिन्हें सैकड़ों अप्रत्यक्ष रोगों का समर्थन और सहयोग प्राप्त होता है, परन्तु इस विधि द्वारा रोगों के पूरे परिवार का निदान होने से निदान सही और विश्वसनीय होता हैं, जो अन्य चिकित्सा पद्धतियों में प्रायः संभव नहीं होता।

५. हथेली और पगथली में दबाव देने पर जितने कम प्रतिवेदन बिन्दुओं पर अथवा जितना कम दर्द आता है, उतना ही व्यक्ति स्वस्थ होता है, जितने ज्यादा दर्द वाले प्रतिवेदन बिन्दु उतना पुराना रोग और स्वास्थ्य खराब होता है, इस प्रकार इस निदान पद्धति द्वारा जो रोग आधुनिक पेथालोजिकल टेस्टों अथवा यंत्रों की पकड़ में नहीं आते, उन रोगों के कारणों का सरलता पूर्वक निदान किया जा सकता है, उपर्युक्त निदान अधिक सही और विश्वसनीय होता है, अतः उस निदान पर आधारित उपचार-प्रभावशाली, दुष्प्रभावों से रहित और अल्पकालीन होता है, जिस पर किसी को भी आंशका नहीं होनी चाहिये।

निदान बिल्कुल सरल, सस्ता, सहज, पूर्ण अहिंसक, दुष्प्रभावों से रहित, स्वावलम्बी, सर्वत्र अपने साथ उपलब्ध होता है। शरीर विज्ञान के विशेष ज्ञान की आवश्यकता नहीं होने से सभी व्यक्ति स्वयं भी आत्मविश्वास के साथ उपचार कर सकते हैं। पूरे शरीर का निदान होने से शरीर के साथ-साथ, मन और वाणी के विकारों का भी, निदान करने वाला एवं अन्तःस्रावी ग्रन्थियों का सरलतम निदान इस पद्धति द्वारा होता है।

शेष पृष्ठ ३३ पर...

पृष्ठ ३२ से... एक्युप्रेशर द्वारा उपचार की विधि- हथेली और पगथली के सभी भागों में दर्द वाले प्रतिवेदन बिन्दुओं का पता लगाने के पश्चात, प्रत्येक दर्द वाले प्रतिवेदन बिन्दु पर दिन में एक या दो बार बीस से तीस सैकण्ड तक, सभी प्रतिवेदन बिन्दुओं पर जमा हुये विजातीय पदार्थों को दूर करने हेतु, अपनी अंगुलियों और अंगूठे से सहनीय घुमावदार दबाव देने से, धीरे-धीरे विजातीय तत्त्व वहाँ से दूर होने लगते हैं, परिणाम स्वरूप शरीर के संबंधित रोग ग्रस्त भागों में प्राण ऊर्जा का प्रवाह नियमित और संतुलित होने लगता है तथा रोगी रोग मुक्त होने लगता है तथा प्रत्यक्ष रोग न भी हो तो भविष्य में रोग होने की सम्भावनाएँ नहीं रहती हैं।

उपचार यथा संभव साधक को स्वयं ही करना चाहिये, स्वयं द्वारा निदान और उपचार करने से व्यक्ति सभी दर्दस्थ प्रतिवेदन बिन्दुओं पर समान दबाव दे सकता है और रोग में जैसे-जैसे राहत मिलती जाती है, उसका आत्म विश्वास और सजगता बढ़ती जाती है, दूसरा व्यक्ति प्रायः सभी दर्दस्थ बिन्दुओं पर दबाव नहीं देता, अतः यथा संभव जितना उपचार रोगी स्वयं कर सके, उतना तो कम से कम उसको स्वयं ही करना चाहिये, अन्य साधक तथा चिकित्सक का रोग से संबंधित प्रमुख प्रतिवेदन बिन्दुओं के दबाव हेतु शीघ्र राहत मिलने तक ही सहयोग लेना चाहिए, क्योंकि अधिकांश चिकित्सक भी एक्युप्रेशर सिद्धान्तों के अनुसार न तो रोगों का पूर्ण निदान ही करते हैं और न ही उपचार। आधुनिक चिकित्सा के निदान को आधार मानकर ही प्रायः नामधारी रोगों के प्रमुख प्रतिवेदन बिन्दुओं का उपचार करते हैं, सहयोगी रोगों की उपेक्षा करने से उनका उपचार कभी-कभी आंशिक और अस्थायी भी होता है एवं अधिक समय ले सकता है, परन्तु आजकल हम नामधारी रोग को सीधा नियन्त्रण में करने का प्रयास करते हैं, जो न्यायोचित नहीं होता। सहयोगियों को दूर किये बिना जिस प्रकार नेता पर नियन्त्रण करना कठिन होता है, प्रायः हम अखबारों में पढ़ते हैं और टी.वी. पर देखते हैं कि प्रदर्शनों के समय प्रदर्शनकारियों के नेता को पुलिस सीधा कैद नहीं करती, पहले प्रदर्शनकारियों को प्रार्थना कर शान्त करने का प्रयास करती है, फिर लाठी चलाती है, अश्रु गैस छोड़ती है और जब सारी भीड़ चली जाती है तो नेता को आसानी से कैद किया जा सकता है, ठीक उसी प्रकार रोग के परिवार के सहायक रोगों से संबंधित सभी प्रतिवेदन बिन्दुओं का उपचार करने से मुख्य रोग की ताकत स्वतः समाप्त हो जाती है तथा वह शीघ्र नियन्त्रण में लाया जा सकता है, जिस प्रकार जनतंत्र में सहयोगियों का समर्थन न मिलने से नेता की ताकत समाप्त हो जाती है, नेता को पद त्याग करना पड़ता है, ठीक उसी प्रकार अप्रत्यक्ष सहयोगी रोगों के दूर हो जाने से मुख्य रोग से शीघ्र एवं स्थायी मुक्ति मिल जाती है, यही एक्युप्रेशर चिकित्सा का मूल सिद्धान्त है।

उपसंहार- स्वास्थ्य विज्ञान जैसे विस्तृत विषय को सम्पूर्ण रूप से अभिव्यक्त करना बड़ा कठिन है, फिर भी हिंसा द्वारा निर्मित दवाओं का उपयोग न लेने का संकल्प करने वाले प्रत्येक साधक को एक्युप्रेशर, सुजोक, रेकी, मुद्राओं, प्राणिक-हिलींग, दूरस्थ, डाउजिंग, पिरामीड, सूर्य किरण, रंग एवं चुम्बक जैसी बिना दवा उपचार एवं स्वास्थ्य सुरक्षा की स्वावलंबी, प्रभावशाली, अहिंसात्मक, निर्दोष, दुष्प्रभावों से रहित चिकित्सा पद्धतियों की साधारण सैद्धान्तिक जानकारी अवश्य रखनी चाहिए ताकि वे स्वावलंबी बन समाधि में रह सके।

- डॉ. चंचलमल चोरडिया

हमको तुम गुणवान दो प्रभु

हे प्रभु अज्ञान मिटा दो
हमको तुम गुणवान बना दो
नित उठ करूँ तुम्हारा वंदन
मन का सब अभिमान मिटा दो

छोटे बड़े का करूँ मैं आदर
मानवता का पाठ पढ़ा दो
गुरुजनों का चरण पखारुँ
गुरु गुरु की पहचान करा दो

मम्मी पापा की करूँ मैं सेवा
बस इतना संस्कार सिखा दो
पनप रहा हूँ माडन युग में
कर्म का शुद्ध बिचार बता दो

देश हित में रहूँ तत्पर
नया नया विज्ञान बता दो
हे प्रभु अज्ञान मिटा दो
हमको तुम गुणवान बना दो।

महाकवि 'तीरुक्कुरल' काव्य रचयिताः तीरुवल्लऊवर का स्टैचू

चिकलठाणा-महाराष्ट्रः विश्व विख्यात महाकवि 'तीरुक्कुरल' महाकाव्य के रचयिता लगभग २००० वर्ष पूर्व तमिलनाडु में जन्में दिगम्बर जैन धर्म के महान कवि, ऐतिहासिक महापुरुष, महान तत्त्ववेत्ता विचारक का स्टेचू १३३ फीट ऊंचा तमिलनाडु के कन्याकुमारी में बिल्कुल स्वामी विवेकानंद स्टैचू के समीप निर्मित है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी कन्याकुमारी के स्वामी विवेकानंद जी के स्टैचू दर्शनार्थ गए, तब समीप के महाकवि 'तीरुवाल्लुवर' स्टैचू के दर्शनार्थ गए और यह समाचार प्रसिद्ध हुआ और पूरे विश्व को जानकारी हुई।

प्रख्यात शिल्पकार गणपति सतपथी ने जनवरी २००० में इस स्टैचू का निर्माण किया था। तमिलनाडु में जाएं तो महाकवि तिरुवल्लुवर के दर्शन अवश्य करें।

- एम् सी जैन पत्रकार
९४२३१५०११६

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

Intensive

- Investment Banking
- NBFC
- Family Office

~ Unique Advice. Capital Market Insight, Efficient Execution, Delivering Financial Growth

~~~ Our Services ~~~

- Public Issue (IPO)
- M&A / Strategic Acquisition
- Wealth Management & Advisory
- Right Issue / Buy-Back
- Takeover / Open Offer
- Valuation & ESOP
- Private Equity
- QIP Placement
- Pre-IPO Placement
- Debt Syndication
- Amalgamation & Demerger
- Financial Engineering

Intensive Fiscal Services Private Limited

RO: - 914, Raheja Chambers, Free Press Journal Marg, Nariman Point, Mumbai –400021, India,
Tel: +91-22-22870443 / 44 / 45, **Contact Person:** Virendra Bajaj +91 9699292100
Email: admin@intensivefiscal.com , Web: www.intensivefiscal.com

10+ NATIONALISE BANK

20+ PRIVATE BANKS

30+ FOREIGN BANKS

50+ NBFC

100+ CO-OPERATIVE BANKS

Which Institute Should I Prefer ?

Who Will be fasted in Providing Loan ?

Who Will Give Lower Rate of Interest ?

Who Will give Higher Loan Eligibility ?

Confused ? Can't Decide ?

Why go to various Institution for your fund requirement ?

Just4uloan
Educate - Empower - Enhance - Engage

Shall cater to your funds by selecting the Financial Institution best suited for you which has :

- Speedy Approval.
- Lowest Processing Fees.
- Fast Disbursement.
- Quick Processing.
- Lowest Rate Of Interest.
- Higher Eligibility.

Do You Know ?

- Working Capital loan is available at approx 11% to 12% p.o.
- Loan is available against plot of NA Land.
- Loan to Builders & developers (Rera Compliant) Within 20-25 working days.
- Unsecured loan between 12-14 % p.o.
- Businessman can avail loan upto Rs. Five crores without collateral under government sponsored scheme
- Eligibility of Housing loan can be increased by considering projected income.
- Loan is available upto 90% of the property value.
- Small business can avail working capital loan upto Rs. 10 Lacs without collateral under government sponsored scheme.
- Loan is available for educational Institute against discounting of future fees.

Contact Now :

Just4uloan
Educate - Empower - Enhance - Engage

Reduce your interest cost without reducing your loan.

Enhance your eligibility.

Loan at your Door Steps.

enquiry@just4uloan.com | www.just4uloan.com

Call Now : 022 - 28615154

Address : 504, Rainbow Chambers, Near MTNL Exchange, S.V. Road, Kandivali (W), Mumbai - 400 067.

Postal Registration Number - MCN/192/2024-2026
WPP License No. MR/Tech/WPP-319/North/2024-26
Published on 09th Jun 2024 & Posting On 10th & 12th of Every Month
Posted at Marol Bazar Post Office, Mumbai - 400 059

गेलार्ड पब्लिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड व संपादक, मुद्रक व प्रकाशक बिजय कुमार जैन, बी-217, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत-400 059, टेलीफैक्स-022-2850 9999
अणु डाक -mailgaylordgroup@gmail.com, अन्तरताना : www.jinagam.co.in, द्वारा विनय ग्राफिक्स, युनिट नं 13, रवी इन्ड. को.-ऑप. सोसाइटी लि., 25 महल इन्ड ईस्टेट, महाकाली केव्हज रोड,
अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत-400093 से मुद्रित करवाकर प्रकाशित किया गया।
RNI NO. MAHHIN/2006/19598